INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान पुलिस कांस्टेबल

भाग – 1

राजस्थान का सामान्य ज्ञान (GK) + महिला एवं बाल अपराध

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान पुलिस कांस्टेबल**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान में** आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/bdirzx

Online Order करें - https://shorturl.at/xceN2

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

राजस्थान का इतिहास

क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	प्राचीन सभ्यताएं	1
2.	प्रमुख राजवंश • गुर्जर प्रतिहार वंश • गुहिल वंश • चौहान वंश • राजस्थान के परमार वंश • कछवाहा राजवंश • बीकानेर के वंशज • किशनगढ़ का राठौड़ वंश • मराठों का राजस्थान में प्रवेश	7
3.	राजस्थान में स्वतंत्रता आंदोलन	45
4.	राजनीतिक जागरण	58
5.	प्रजामण्डल आंदोलन	63
6.	राजस्थान का एकीकरण	73
7.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	77

कला एवं संस्कृति

1.	राजस्थान के प्रमुख मंदिर	80
2.	राजस्थान की प्रमुख मस्जिदें, किले, महल, छतरीयां	91
3.	चित्रकला और हस्तशिल्प	110
4.	भाषा एवं साहित्य व बोलियाँ	125

5.	वेशभूषा एवं आभूषण	127
6.	वाद्य यंत्र	129
7.	लोक देवता एंव लोक देवियाँ	137
8.	मेले और त्यौहार	144
9.	लोक संगीत	155
10.	लोक नृत्य	159
11.	धार्मिक जीवन, धार्मिक समुदाय	169
	राजस्थान का भूगोल	
1.	भूगर्भिक संरचना एवं भू-आकृतिक प्रदेश	177
2.	जलवायु दशाएं, मानसून तंत्र एवं जलवायु प्रदेश	199
3.	प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीव – जन्तु एवं अभयारण्य	206
4.	मृदाएँ	214
5.	नदियाँ, झीलें एवं बाँध	216
6.	राजस्थान के प्राकृतिक संसाधन खनिज सम्पदा	235
7.	पशु सम्पदा	242
8.	जनसंख्या-वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, एवं लिंगानुपात	249
9.	प्रमुख जनजातियाँ	253
10.	राजस्थान में पर्यटन	256
	राजस्थान की अर्थव्यवस्था	
1.	राजस्थान की खाद्य व व्यावसायिक फसलें, कृषि आधारित उद्योग	259

2.	अर्थव्यवस्था का वृहत् परिदृश्य	264
3.	राजस्थान में औद्योगिक विकास	267
4.	गरीबी एवं बेरोजगारी	275
5.	विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं	280
	राजस्थान की राजव्यवस्था	
1.	राज्य की राजनीतिक व्यवस्था (परिचय) राज्यपाल	286
2.	मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्	293
3.	राज्य विधानसभा	298
4.	उच्च न्यायालय	306
5.	राजस्थान लोक सेवा आयोग	313
6.	लोकायुक्त	315
7.	राज्य निर्वाचन आयोग	318
8.	राज्य सूचना आयोग	319
9.	राज्य मानवाधिकार आयोग	322
10.	राज्य सचिवालय और मुख्य सचिव	324
11.	जिला प्रशासन	328
12.	स्थानीय स्वशासन एवं पंचायती राज संस्था	332
13.	महिला एवं बाल अपराध	340

मेवाड़ का इतिहास

मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासको का कालक्रम निम्न प्रकार से हैं :-

गुहिल वंश (सिसोदिया) के शासक

राजा गुहिल का जीवन परिचय :-

- **विजयभूप** ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहाँ इनका शासन सदियों तक रहा। विजयभूप की 6वीं पीढ़ी में **शिलादित्य** नामक व्यक्ति **वल्लभीनगर** का शासक बना । राजस्थान के आबू में उस समय **परमार वंश** का शासन था, जिनकी राजधानी **चंद्रावती** थी । परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है । पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती है तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास **अबुर्दा देवी मंदिर** चली जाती है । पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ौसी राज्य ने आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं । शिलादित्य के एक सेवक ने आबू पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी । **पुष्पावती** ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम **गुहिल** रख दिया गया । बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।
- **566** ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

बप्पारावल / बापा रावल (734 ई. 810 ई.)

- बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा थे। **बप्पा रावल का जन्म** मेवाड़ के महाराजा गुहिल की मृत्यु के 191 वर्ष **713 ई.** में **ईडर** में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को **सिसोदिया** भी कहा जाता है, जिनमें आगे चलकर महान राजा राणा कुम्भा, राणा साँगा, महाराणा प्रताप हुए।
- भील समुदाय ने अरबों के खिलाफ युद्ध में बप्पा रावल का सहयोग किया। यदि बापा का राज्यकाल 30 साल का रखा जाए तो वह सन् **723** के लगभग गद्दी पर बैठा होगा। उससे पहले भी उसके वंश के कुछ प्रतापी राजा मेवाड़ में हो चुके थे, किन्तु बापा का व्यक्तित्व उन सबसे बढ़कर था। चित्तौड़ का मजबूत दुर्ग उस समय तक मोरी वंश के राजाओं के हाथ में था।
- परंपरा से यह प्रसिद्ध है कि हारीत ऋषि की कृपा से बापा ने मानमोरी को मारकर इस दुर्ग को हस्तगत किया। चित्तौड़ पर अधिकार करना कोई आसान काम न था। अनुमान है कि बापा की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई । **सन् 712 ई.** में मुहम्मद कासिम से सिंध को जीता।

आदि वराह मंदिर - यह मंदिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मंदिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी । उन्होंने शासक बनने के बाद अपने वंश का नाम ग्रहण नहीं किया, बल्कि मेवाड़ वंश के नाम से नया राजवंश चलाया था, और **चित्तौड़ को अपनी राजधानी** बनाया । बप्पा रावल एक न्यायप्रिय शासक थे। वे राज्य को अपना नहीं मानते थे, बल्कि शिवजी के एक रूप **'एकलिंग जी'** को ही उसका असली शासक मानते थे और स्वयं उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलाते थे। लगभग 20 वर्ष तक शासन करने के बाद उन्होंने वैराग्य ले लिया और अपने पुत्र को राज्य देकर शिव की उपासना में लग गये। महाराणा संग्राम सिंह (राणा साँगा), उदय सिंह और महाराणा प्रताप जैसे श्रेष्ठ और वीर शासक उनके ही वंश में उत्पन्न हुए थे।

बप्पा रावल के सिक्के : गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अजमेर के **सोने के सिक्के को बप्पा रावल** का माना है। इस सिक्के का तोल 11.5 ग्रेन **(65 रत्ती)** है। इस सिक्के में सामने की ओर ऊपर के हिस्से में माला के नीचे श्री बोप्प लेख है, **बाई ओर त्रिशूल है और उसकी दाहिनी तरफ वेदी पर शिवलिंग** बना है। इसके दाहिनी ओर नंदी शिवलिंग की ओर मुख किए बैठा है। शिवलिंग और नंदी के नीचे दंडवत् करते हुए एक पुरुष की आकृति है। सिक्के के पीछे की तरफ चमर, सूर्य, और छत्र के चिह्न हैं। इन सबके नीचे दाहिनी ओर मुख किए एक गौ खड़ी है और उसी के पास दूध पीता हुआ बछड़ा है। ये सब चिह्न बप्पा रावल की शिवभक्ति और उसके जीवन की कुछ घटनाओं से संबद्ध हैं। बप्पा रावल के बारे में कुछ तथ्य द्वारा बप्पा रावल को **कालभोजादित्य** के नाम से भी जाना जाता है इनके समय चित्तौड़ पर मौर्य शासक मान मोरी का राज था। 734 ई. में बप्पा रावल ने 20 वर्ष की आयु में मान मोरी को पराजित कर चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार किया। बप्पा रावल को **हारीत ऋषि** के द्वारा महादेव जी के दर्शन होने की बात मशहूर है।

एकलिंग जी का मंदिर - उदयपुर के उत्तर में कैलाशपुरी में स्थित इस मंदिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल ने करवाया । इसके निकट हारीत ऋषि का आश्रम है।

- 753 ई. में बप्पा रावल ने 39 वर्ष की आयु में सन्यास लिया। इनका समाधि स्थान एकलिंगपुरी से उत्तर में एक मील दूर स्थित है। इस तरह इन्होंने कुल 19 वर्षों तक शासन किया। बप्पा रावल का देहान्त **नागदा** में हुआ, जहाँ इनकी समाधि स्थित है। शिलालेखों में वर्णन - **कुम्भलगढ़ प्रशस्ति** में बप्पा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है आबू के शिलालेख में बप्पा रावल का वर्णन मिलता है कीर्ति स्तम्भ शिलालेख में भी बप्पा रावल का वर्णन मिलता है

रणकपुर प्रशस्ति में बप्पा रावल व कालभोज को अलग-अलग व्यक्ति बताया गया है। हालांकि आज के इतिहासकार इस बात को नहीं मानते । कर्नल जेम्स टॉड को 8वीं सदी का शिलालेख मिला, जिसमें मानमोरी (जिसे बप्पा रावल ने पराजित किया) का वर्णन मिलता है। कर्नल जेम्स टॉड ने इस शिलालेख को समुद्र में फेंक दिया।

- यह हारीत ऋषि का अनुयायी था ।
- 734 ई. में मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ पर कब्जा किया।
- राजधानी - नागदा (उदयपुर) सास बहु का मंदिर, नागदा में एक लिंग मंदिर (शिवजी) का निर्माण करवाया।
- मेवाड़ के राजा खुद को एकलिंग जी का दीवान मानते थे।
- बप्पा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुये गजनी तक चला गया।
- इसने गजनी के शासक सलीम को हटा दिया और अपने भान्जे को वहाँ का शासक बनाया ।
- मेवाड़ में सोने के सिक्के चलाये ।
- सोने के सिक्के का भाव 115 ग्रेन था ।
- बप्पा का वास्तविक नाम **काल भोज** था।
- सी.वी वैद्य ने बाप्पा रावल को राजस्थान का चार्ल्स मेटकोफ, कहा ।

अल्लट (951-971 ई.)

- अल्लट 951 ई. में मेवाड़ के शासक बने । आहड़ से प्राप्त शक्तिकुमार का लेख 977 ई. के अनुसार अल्लट की माता महालक्ष्मी का राठौड़ वंश की होना तथा अल्लट की राणी **हरियदेवी** का हूण राजा की पुत्री होना और उस राणी का हर्षपुर गांव बसाना अंकित है, अल्लट ने आहड़ को राजधानी बनाई व यहाँ वराह मंदिर का निर्माण करवाया। यह लेख टॉड को मिला था । यह अपूर्ण लेख उदयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित है ।
- राजा अल्लट के समय (वि. सं 1010) के शिलालेख से सारणेश्वर के मंदिर का छबना बनाया गया था।
- राजा अल्लट के समय का लेख मूल में **आदि वराह मंदिर** में लगा हुआ है जो मेवाड़ के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
- अल्लट ने मेवाड़ में सबसे पहले नौकरशाही का गठन किया।

शक्तिकुमार (977-993 ई.)

- गुहिल शासक शक्तिकुमार के समय मे मालवा के परमार राजा मुंज ने चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार कर लिया।
- मुंज के वंशज राजा भोज ने "त्रिभुवन नारायण शिव मंदिर' जिसे अब "मोकल का समिद्धेश्वर मंदिर" कहते हैं, का निर्माण करवाया।
- राजा भोज 1012-1031 ई. के मध्य चित्तौड़ मे रहा था।
- 11 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक मेवाड़ परमारों के अधीन रहा। इसके बाद चालुक्यों ने परमारों से मेवाड़ छीन लिया।

रणसिंह (कर्णसिंह) (1158 - 68 ई.) :-

- गुहिल शासक रणसिंह जिसको कर्णसिंह भी कहते हैं, 1158 ई. मे मेवाड़ का शासक बना।
- रणसिंह के पुत्र **क्षेमसिंह** ने मेवाड़ की रावल शाखा को जन्म दिया।
- रणसिंह के अन्य पुत्र राहप ने सीसोदा ग्राम की स्थापना कर **राणा शाखा** की नींव डाली। जो **सिसोदा** में रहने के कारण सिसोदिया कहलाए।

क्षेमसिंह

- इसके दो पुत्र **सामन्तसिंह व कुमारसिंह** हुए।
- सामन्तसिंह **1172 ई.** में मेवाड़ का शासक बना लेकिन नाडौल (जोधपुर) के चौहान राजा कीतू (कीर्तिपाल) ने सामन्त सिंह से मेवाड़ राज्य छीन लिया तथा सामन्तसिंह ने वागड़ में अपना राज्य स्थापित किया।

कुमारसिंह

- कुमारसिंह (क्षेमसिंह का पुत्र) ने 1179 ई. में कीर्तिपाल को पराजित कर मेवाड़ पर पुनः अधिकार कर लिया।
- कुमारसिंह का वंशज जैत्रसिंह (1213-1253 ई.) प्रतापी और वीर राजा हुआ।

जैत्र सिंह (1213 - 1252 / 53 ई.)

- सामन्त सिंह के पश्चात् के प्रमुख शासकों में एक जैत्र सिंह 1213 ई. में मेवाड़ के शासक बने । इनका शासनकाल 1213 ई. से 1252 ई. के आस-पास था । जैत्र सिंह उस समय के मेवाड़ शासकों में सबसे शक्तिशाली शासक थे। तुर्क गुलाम शासक **इल्तुतमिश** व जैत्र सिंह के मध्य गोगुन्दा के पास भूताला (गिर्वा, उदयपुर) नामक स्थान पर युद्ध (सम्भवतः **1227 ई.** में) हुआ । समय सीमा तय नहीं होने के कारण इतिहासकारों द्वारा **इल्तुतमिश** के मेवाड़ पर आक्रमण की अवधि 1222 ई. से 1229 ई. के बीच मानी गई है। इस आक्रमण में जैत्र सिंह व इल्तुतमिश की सेनाओं के मध्य जबरदस्त टक्कर हुई जिसमें इल्तुतमिश को पीछे हटना पड़ा। हालांकि इन युद्धों में राजधानी नागदा में काफी तोड़फोड़ व नुकसान होने के कारण जैत्र सिंह ने अपनी राजधानी को नागदा से चित्तौड़ स्थानांतरित कर दिया । जैत्र सिंह की इस सफलता का प्रमाण आबू शिलालेख, चीरवा शिलालेख हैं। 1248 ई. में नासुरुद्दीन महमूद द्वारा मेवाड़ आक्रमण का भी सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया । राजस्थानी इतिहासकार **डॉ. दशरथ शर्मा** के अनुसार जैत्र सिंह का शासनकाल मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्ण काल था । जैत्र सिंह के प्रमुख सेनानायकों में बालक और मदन प्रमुख थे।
- अपने पूर्वजों के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए उसने उस समय के **सोनगरा चौहान** शासक उदयसिंह चौहान पर आक्रमण कर दिया। उदयसिंह ने जैत्रसिंह के साथ संधि कर ली तथा अपनी पुत्री चचिक देवी/रूपा देवी का विवाह जैत्रसिंह के पुत्र तेजसिंह के साथ कर दिया।

- ***भूताला का युद्ध*** :- जैत्रसिंह और इल्तुतमिश के बीच हुआ जिसमें जैत्रसिंह जीत गया था।
- जयसिंह सूरी की पुस्तक ***'हम्मीर मदमर्दन'*** भूताला युद्ध की जानकारी देती है।

तेजसिंह (1250-1273 ईस्वी.)

- जैत्रसिंह के पश्चात् उसका पुत्र तेज सिंह मेवाड़ का शासक बना । इसकी शासनावधि 1252 ई. से 1273 ई. तक थी। तेज सिंह भी अपने पिता जैत्र की ही तरह पराक्रमी थे। तेजसिंह के शासनकाल में तुर्क शासक ***गयासुद्दीन बलबन*** ने मेवाड़ पर आक्रमण किया लेकिन उसे मेवाड़ सेना के प्रतिरोध के फलस्वरूप पीछे हटना पड़ा।
- तेज सिंह की पत्नी ***रानी जयतल्ल देवी*** ने चित्तौड़ में श्याम पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया। तेजसिंह के शासनकाल में मेवाड़ चित्रशैली का पहला चित्रित ग्रंथ श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रचूर्णि लिखा गया था ।
- इनकी उपाधि - उमापतिवारलब्ध तथा इनकी रानी का नाम जेतल दे था।
- तेजसिंह के समय मेवाड़ का प्रथम चित्रित ग्रंथ - 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी जिसके लेखक कमलचंद थे।
- तेजसिंह ने चित्तौड़ में श्याम पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।

समरसिंह (1273-1302 ई.)

- रावल समर सिंह एक योग्य व प्रतापी शासक था। उसने शत्रुओं का संहार कर गुजरात का तुर्कों से उद्धार किया । चीरवा शिलालेख में समर सिंह को शत्रुओं की शक्ति का अपहरणकर्ता व कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में उसे शत्रुओं का संहार करने में शेर के समान बताया गया है। आबू के शिलालेख के अनुसार समर सिंह ने गुजरात को तुर्कों से मुक्त कराया । समर सिंह के शासनकाल 1273 ई. से 1302 ई. के बीच था । रावल समर सिंह के दो पुत्र थे रतन सिंह व कुंभकर्ण । रावल सिंह मेवाड़ का उत्तराधिकारी बना जबकि ***कुंभकर्ण*** ने नेपाल में गुहिल सत्ता की स्थापना की।
- समरसिंह के शासन काल में उसके पुत्र कुंभकर्ण ने नेपाल में गुहिल वंश की स्थापना की तथा दूसरे पुत्र रतनसिंह ने चित्तौड़ पर शासन किया।

रतन सिंह (1302-1303)

- रावल समरसिंह के पश्चात् रावल रतनसिंह ने मेवाड़ का शासक बना
- इसका शासनकाल 1302 ई.- 1303 ई. तक का था।
- रावल रतन सिंह रावल शाखा का अंतिम शासक था।
- इनका दरबारी विद्वान राघव चेतन था।

रानी पद्मिनी –

- रानी पद्मिनी सिंहल द्वीप (श्रीलंका) के राजा गंधर्वसेन व रानी चंपावती की पुत्री थी।
- पद्मिनी की सुन्दरता का बखान हीरामन जाति का तोता करता था।
- रानी पद्मिनी रतनसिंह का गधर्व विवाह हुआ।
- पद्मिनी व रतनसिंह के विवाह के पश्चात् गौरा (रानी पद्मिनी के चाचा) – बादल (रानी पद्मिनी के भाई) व 1600 महिलाऐं पद्मिनी के साथ मेवाड़ आई।
- राघव चेतन एक जाना – माना तांत्रिक था जिसका पता चलने पर रतनसिंह ने राघव चेतन को मेवाड़ छोड़ने का आदेश दिया।
- तत्पश्चात् राघव चेतन अल्लाउद्दीन खिलजी की शरण में गया।
- अलाउद्दीन को पद्मिनी की जानकारी राघव चेतन ने दी । (पद्मावत ग्रन्थ के अनुसार)

चित्तौड़गढ़ का प्रथम शाका – 1303 ई.
केशरिया – रावल रतनसिंह के नेतृत्व में हुआ
जोहर – रानी पद्मिनी के नेतृत्व में हुआ

- अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़गढ़ का नाम खिज्राबाद रख कर इसे अपने पुत्र खिज्र खा को सौंप दिया। खिजरा खा ने चित्तौड़ पर 1303 ई. -1313 ई. तक शासन किया।
- ग्रन्थ पद्मावत में इस युद्ध में रतनिसंह को हृदय, पद्मिनी की बुद्धि व अलाउद्दीन को माया की संज्ञा दी गई है।
- चित्तौड़ विजय के पश्चात् अल्लुद्दीन खिलजी ने गंभीरी नदी पर बांध बनवाया।
- चित्तौड़गढ़ में था बाई पीर की दरगाह पर शिलालेख लिखवाया।
- सिसोदा ठिकाने के सामंत लक्ष्मण ने सिंह चित्तौड़ किले रक्षा में अपने 7 पुत्रो सहित अपना बलिदान दिया।
- ***Note – 1303 के आक्रमण के बाद ।***
- लेकिन गौरीशंकर हीराचंद ओझा इस घटना को काल्पनिक बताते हैं और आक्रमण (यह आक्रमण 1303 वाला नहीं है) का कारण अल्लाउद्दीन खिलजी का गुजरात तक अधिकार करने की लालसा बताते हैं जबकि गोपीनाथ शर्मा इस आक्रमण को काल्पनिक नहीं वास्तविक मानते हैं
- पद्मावत ग्रन्थ – 1540 ई. में शेरशाह सूरी के शासनकाल में अवधी भाषा में पद्मावत ग्रन्थ की रचना मालिक मुहम्मद जायसी द्वारा की गई।
- खजाइन उल फतुह या तारीख ए अलाइ – इसका रचनाकार आमिर खुशरो था जो अल्लाउद्दीन के सैनिक अभियान में साथ था। इस ग्रन्थ में आमिर खुशरो ने अल्लाउद्दीन खिलजी की चित्तौड़ विजय का सजीव वर्णन किया
- तारीख ए फरिश्ता – इसका लेखक फरिश्ता पद्मिनी को रावल रतन सिंह की पुत्री बताता है।
- 1313 ई. 1320 ई. तक चित्तौड़ शासक मालदेव (जालौर शासक कान्हड़देव का भाई) रहा।
- मालदेव ने सिसोदा सामन्त हम्मीर के साथ अपनी पुत्री का विवाह किया।
- 1320 ई.-1326 ई. तक चितौड़गढ़ पर जैसासिंह का अधिकार रहा।

7. सही सुमेलित नहीं है-
(a) काँगड़ कांड- अलवर
(b) डाबड़ा कांड -नागौर
(c) तमिसो कांड- धौलपुर
(d) पूनावाडा कांड- डूंगरपुर
उत्तर :- a

8. 1890 के दौर में बिजौलिया के जागीरदार कौन थे –
(a) चौहान (b) परमार
(c) राणावत (d) शक्तावत
उत्तर :- b

9. राजस्थान मध्य भारत सभा की स्थापना अजमेर में किस वर्ष हुई थी
(a) 1923 (b) 1922
(c) 1920 (d)1929
उत्तर :- c

10. सूअरो की समस्या के निराकरण हेतु प्रारम्भ किया गया आन्दोलन कौनसा था ?
(a) मेव किसान आन्दोलन
(b) बूँदी किसान आन्दोलन
(c) अलवर किसान आन्दोलन
(d) जाट किसान आन्दोलन
उत्तर :- c

अध्याय – 5

प्रजामण्डल आंदोलन

प्रजामण्डल :-

- 1927 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना के साथ ही सक्रिय राजनीति का काल आरम्भ हुआ ।
- कांग्रेस का समर्थन मिल जाने के बाद इसकी शाखायें स्थापित की जाने लगी।
- 1931 ई. में रामनारायण चौधरी ने अजमेर में देशी राज्य लोक परिषद् का प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन आयोजित किया।
- 1938 ई. में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के लोगों द्वारा चलाये जाने वाले स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन दिया ।

बीकानेर में प्रजामण्डल :- बीकानेर के महाराजा गंगासिंह प्रतिक्रियावादी व निरंकुश शासक थे।

- गंगासिंह (1880-1943) प्रथम भरतपुर के बाद शांति समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले एकमात्र भारतीय प्रतिनिधि व 1921 में स्थापित नरेन्द्र मण्डल के संस्थापकों में से एक थे।
- बीकानेर क्षेत्र के प्रारंभिक नेता कन्हैयालाल ढूँढ़ व स्वामी गोपालदास थे, इन्होंने 1907 में चूरू में सर्वहितकारिणी सभा स्थापित की।
- सर्वहितकारिणी सभा ने चूरू में लड़कियों की शिक्षा हेतु 'पुत्री पाठशाला' व अनुसूचित जातियों की शिक्षा के लिए कबीर पाठशाला स्थापित की गई। महाराजा इस रचनात्मक कार्य के प्रति भी आशंकित हो उठे और षड़यंत्र बताकर उन्हें प्रतिबंधित कर दिया।
- 26 जनवरी 1930 को स्वामी गोपालदास व चन्दनमल ब्राह्मण ने सहयोगियों के साथ चूरू के सर्वोच्च शिखर धर्मस्तुप पर तिरंगा फहराया।
- अप्रैल, 1932 ई. में जब लंदन में महाराजा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने गये तो बीकानेर में एक दिग्दर्शन' नामक पेम्पलेट बांटे गये। जिसमें बीकानेर की वास्तविक दमनकारी नीतियों का खुलासा किया गया। लौटकर महाराजा ने सार्वजनिक सुरक्षा कानून लागू किया।
- स्वामी गोपालदास, चंदनमल बहड़, सत्यनारायण सर्राफ, खूबचन्द सर्राफ आदि को बीकानेर षड़यंत्र केस के नाम पर गिरफ्तार कर लिया गया।
- अक्टूबर, 1936 में मघाराम वैद्य ने कलकत्ता में बीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना की।
- 4 अक्टूबर, 1936 ई. को प्रमुख नेता शीघ्र ही निर्वाचित कर दिये गये, जिनमें वकील मुक्ताप्रसाद, मघाराम वैद्य व लक्ष्मीदास शामिल थे । रघुवरदयाल ने 22 जुलाई, 1942 ई. को बीकानेर प्रजा ने परिषद् की स्थापना की, जिसका उद्देश्य महाराजा के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था।

- 1943 में गंगासिंह जी की मृत्यु के बाद शार्दुल सिंह गद्दी पर बैठे। वे भी दमन में विश्वास रखते थे।
- द्वारका प्रसाद नामक छठी कक्षा के बालक को संस्था से निकाला गया क्योंकि उसने उपस्थिति गणना के समय जयहिन्द बोल दिया था।
- 26 अक्टूबर, 1944 ई. को बीकानेर दमन विरोधी दिवस मनाया गया जो राज्य में प्रथम सार्वजनिक प्रदर्शन था। इसी बीच भारत में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई और महाराजा ने उत्तरदायी शासन की घोषणा की।
- 30 जून, 1946 ई. में रायसिंह नगर में हो रहे प्रजा परिषद् के सम्मेलन में पुलिस ने गोलीबारी की। बदली हुई परिस्थितियों को देखते हुए सत्ता हस्तान्तरण के लक्षण जब दिखने लगे तो प्रजा परिषद् का कार्यालय पुनः स्थापित किया गया।
- 1946 ई. में ही दो समितियों, संवैधानिक समिति व मताधिकार समिति की स्थापना की गई। रिपोर्ट को लागू करने का आश्वासन तो दिया गया पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं हो पाई व उत्तरदायी शासन की मांग अधूरी ही रही।
- 16 मार्च, 1948 ई. में जसवंत सिंह द्वाउदसर के नेतृत्व में मंत्रिमण्डल बना जिसे प्रजा परिषद ने अस्वीकृत कर दिया और उसके मंत्रियों ने इस्तीफा दिया।
- 30 मार्च, 1949 ई. को वृहत्तर राज्य के निर्माण के साथ रघुवर दयाल, हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमण्डल में सम्मिलित हुए।

<u>जैसलमेर में प्रजामण्डल</u> :- यह क्षेत्र राजस्थान का सर्वाधिक पिछड़ा क्षेत्र था, जो विस्तारित रेगिस्तान, यातायात संचार के सीमित साधनों व राजनीतिक पृथकता के कारण शेष राजस्थान से कटा ही रहा।

- यहाँ के महारावल का दमन अत्यन्त तीव्र था। जिसके कारण 1915 ई. में सर्व हितकारी वाचनालय मीठालाल व्यास के आशीर्वाद से सागरमल गोपा व उसके साथियों द्वारा स्थापित किया गया।

<u>मेवाड़ में प्रजामण्डल</u> :- उदयपुर में प्रजामण्डल आंदोलन की स्थापना का श्रेय श्री माणिक्यलाल वर्मा को जाता है। 24 अप्रैल, 1938 को श्री बलवन्तसिंह मेहता की अध्यक्षता में मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना की।

- प्रजामण्डल की स्थापना के समाचारों से मेवाड़ की जनता में अभूतपूर्व उत्साह का संचार हुआ, परन्तु जैसे ही मेवाड़ सरकार को इसकी सूचना मिली, सरकार ने श्री वर्माजी को मेवाड़ से निष्कासित कर दिया तथा बिना सरकार से आज्ञा लिए सभा, समारोह करने संस्थाएँ बनाने एवं जुलूस निकालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
- उदयपुर सरकार द्वारा मेवाड़ प्रजामण्डल को 24 सितम्बर, 1938 को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया, परन्तु उसी दिन नाथद्वारा में निषेधाज्ञा के बावजूद कार्यकर्ताओं द्वारा विशाल जुलूस निकाला गया।
- प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं ने सरकार को अल्टीमेटम दिया कि 4 अक्टूबर, 1938 तक प्रजामण्डल से प्रतिबन्ध नहीं हटाया गया तो सत्याग्रह प्रारम्भ किया जाएगा।
- मेवाड़ सरकार ने प्रजामण्डल नेताओं व कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया । श्री भूरेलाल बया को सराड़ा किले (मेवाड़ का काला पानी) में नजरबंद कर दिया गया।
- विजयादशमी के दिन प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया । क्रांतिकारी रमेशचन्द्र व्यास को पहला सत्याग्रही बनकर गिरफ्तार होने का श्रेय प्राप्त हुआ। सत्याग्रहियों पर पुलिस दमन चक्र प्रारम्भ हो गया।
- इसकी परवाह न करते हुए सत्याग्रहियों ने जगह-जगह जुलूस निकालें, आमसभाएँ की एवं सरकार की आलोचना की।
- श्री माणिक्यलाल वर्मा ने 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तिका छपवाकर वितरित करवाई जिसमें मेवाड़ में व्याप्त अव्यवस्था एवं तानाशाही की आलोचना की गई।
- 24 जनवरी, 1939 को श्री माणिक्यलाल वर्मा की पत्नी नारायणी देवी वर्मा एवं पुत्री को प्रजामण्डल आंदोलन में भाग लेने के कारण राज्य से निष्कासित कर दिया गया।
- मेवाड़ में भयंकर अकाल पड़ने के कारण प्रजामण्डल ने गाँधीजी के आदेश पर 3 मार्च, 1939 को सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया। श्री वर्माजी का स्वास्थ्य खराब होने की खबर मिलने पर श्री जवाहर लाल नेहरू ने मेवाड़ सरकार को पत्र लिखा, तब 8 जनवरी, 1940 को उन्हें जेल से रिहा किया गया।
- इसके बाद प्रजामण्डल ने बेगार एवं बलेठ प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया फलस्वरूप मेवाड़ सरकार को इन दोनों, प्रथाओं पर रोक लगानी पड़ी। यह मेवाड़ प्रजामण्डल की पहली नैतिक विजय थी।
- 22 फरवरी, 1941 को मेवाड़ प्रजामण्डल पर से प्रतिबन्ध हटने के बाद प्रजामण्डल ने सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया एवं 25-26 नवम्बर, 1941 को श्री माणिक्यलाल वर्मा की अध्यक्षता में पहला अधिवेशन आयोजित किया, जिसका उद्घाटन आचार्य 'जे. बी. कृपलानी' ने किया।
- मेवाड़ प्रजामण्डल ने कांग्रेस द्वारा 9 अगस्त, 1942 को शुरू किये गये 'भारत छोड़ों आंदोलन' में सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारम्भ किया।
- 20 अगस्त, 1942 को प्रजामण्डल की कार्यसमिति ने मेवाड़ महाराणा को पत्र द्वारा चेतावनी दी कि यदि 24 घंटे के भीतर महाराजा ब्रिटिश सरकार से संबंध विच्छेद नहीं करते हैं तो जन आंदोलन प्रारम्भ किया जाएगा।
- सरकार द्वारा प्रजामण्डल कार्यकारिणी के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा 23 अगस्त से जुलूस आदि पर प्रतिबंध लगा दिए गये। सरकारी दमन चक्र प्रारम्भ हो गया कार्यकर्ताओं ने सर्वत्र 'अंग्रेजों भारत छोड़ों' के नारे बुलन्द किए गये। स्त्रियों एवं छात्रों ने भी आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

- सरकार ने बड़ी संख्या में सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर लिया। नारायणी देवी वर्मा, उनकी पुत्री आदि कई महिलाओं को गिरफ्तार किया गया। मेवाड़ प्रजामण्डल को मेवाड़ सरकार द्वारा वापस गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया।
- प्रजामण्डल ने भील सेवाकार्य, भील छात्रावास आदि कार्यों को पुनः प्रारम्भ किया। ठक्कर बापा की सलाह से उचित योजना बनाई गई।
- मेवाड़ हरिजन सेवक संघ के कार्यों को पुनर्गठित कर वहाँ गृह उद्योगों का विकास किया गया।
- 31 दिसम्बर, 1945 एवं 1 जनवरी, 1946 को उदयपुर के सलेटिया मैदान में 'अखिल भारतीय देशी लोक राज्य परिषद्' का छठा अधिवेशन पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के शासकों से बदलती राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप अविलंब उत्तरदायी शासन की स्थापना की अपील की गई।

<u>मारवाड़ में प्रजामण्डल आंदोलन</u> :- जोधपुर राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना एवं नागरिक अधिकारों की माँग बीसवीं सदी के तीसरे दशक में जोर पकड़ने लगी। जागरूक कार्यकर्ताओं- जयनारायण व्यास, भँवरलाल सर्राफ, आनन्दराज सुराणा आदि ने इस हेतु 1920 में 'मारवाड़ सेवा संघ' नामक पहली राजनीतिक संस्था स्थापित की।

- परन्तु इसके कुछ समय बाद ही निष्क्रिय हो जाने के कारण 1921 ई. में इसके स्थान पर 'मारवाड़ हिताकारिणी सभा' का गठन हुआ।
- इन्होंने समय-समय पर सरकार की जनविरोधी नतियों की आलोचना की एवं विरोध प्रकट किया।
- 11-12 अक्टूबर, 1929 को मारवाड़ हितकारिणी सभा का प्रथम अधिवेश जोधपुर में आयोजित होना था परन्तु जोधपुर सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया एवं प्रमुख राजनीतिक नेताओं - जयनारायण व्यास, आनन्दराज सुराणा एवं भँवरलाल सर्राफ आदि को जेल में डाल दिया गया एवं अध्यादेश द्वारा सभा, जुलूस, धरने आदि पर प्रतिबंध लगा दिया।
- 10 मई, 1931 को जयनारायण व्यास आदि ने 'मारवाड़ यूथ लीग' की स्थापना की।
- मारवाड़ राज्य लोक परिषद् की बैठक चांदकरण शारदा की अध्यक्षता में 24-25 नवम्बर, 1931 को पुष्कर (अजमेर) में हुई ।
- कस्तूरबा गाँधी, काका कालेलकर आदि इसमें उपस्थिति थे। इस सम्मेलन ने मारवाड़ में राजनीतिक चेतना का प्रसार किया ।
- सरकार ने 1932 में मारवाड़ हितकारिणी सभा एवं मारवाड़ यूथ लीग तथा बाल भारत सभा को अवैध घोषित कर दिया।
- 1934 में जयनारायण व्यास, आनन्दमल सुराणा आदि ने राज्य में उत्तरदायी सरकार की स्थापना एवं नागरिक अधिकारों की रक्षा करने के उद्देश्य से जोधपुर में 'जोधपुर प्रजामण्डल' का गठन किया।
- कृष्णा दिवस मारवाड़ की कृष्णा कुमारी को न्याय दिलवाने के लिए 1935 में बम्बई में मनाया गया था।
- 1936 में कराची में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के अधिवेशन में जयनारायण व्यास को महामंत्री चुना गया । श्री व्यास ने बम्बई से अखण्ड भारत का सम्पादन प्रारम्भ किया।
- 1937 में दीपावली के दिन जोधपुर प्रजामण्डल एवं सिविल लिबर्टीज यूनियन को अवैध घोषित कर दिया गया।
- 1938 के कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन के बाद 16 मई, 1938 को जोधपुर में 'मारवाड़ लोक परिषद्' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य महाराजा की छत्रछाया में उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना था।
- फरवरी, 1939 में सरकार द्वारा जयनारायण व्यास पर लगाये गये प्रतिबंध हटाने के बाद वे जोधपुर आये एवं मारवाड़ में प्रजामण्डल आंदोलन की बागडोर संभाली । व्यासजी पर से प्रतिबन्ध हटवाने में बीकानेर महाराजा गंगासिंह जी का बड़ा योगदान था।
- अप्रैल, 1940 में पं. जवाहरलाल नेहरू ने मारवाड़ की स्थिति के आकलन हेतु पंडित द्वारकानाथ काचरू को जोधपुर भेजा जिन्होंने रिपोर्ट में जोधपुर के वातावरण को दम घोंटने वाला बताया । महात्मा गाँधी ने भी मारवाड़ की स्थिति से क्षुब्ध होकर अपने पत्र 'हरिजन' में उसकी आलोचना की। परन्तु सरकार का दमन चक्र तेज हो गया।
- 26 जून, 1940 को मारवाड़ लोक परिषद् एवं मारवाड़ शासन के मध्य समझौता हुआ जिसमें सरकार ने लोक परिषद् को जन प्रतिनिधि सभा के रूप में मान लिया एवं महाराजा की छत्र-छाया में उत्तरदायी सरकार की स्थापना के उद्देश्य को स्वीकार कर लिया तथा कार्यकर्ताओं को रिहा कर दिया गया तब लोक परिषद् ने अपना आंदोलन समाप्त कर दिया।
- आंदोलन की अपूर्व सफलता ने लोक परिषद् के जीवन में नवीन चेतना एवं शक्ति का संचार किया। जून, 1940 में श्री जयनारायण व्यास को मारवाड़ लोक परिषद् का अध्यक्ष चुना गया। 28 मार्च, 1941 को मारवाड़ में उत्तरदायी शासन दिवस मनाया गया।
- 7-8 जून, 1941 को सरकार ने प्रथम बार जोधपुर नगरपालिका के चुनाव क्षेत्रीय आधार पर करवाये। लोक परिषद् को 22 में से 18 स्थानों पर जीत हासिल हुई एवं श्री जयनारायण व्यास नगरपालिका के प्रथम निर्वाचित अध्यक्ष बने।
- 26 जनवरी, 1942 को लोक परिषद् के तत्वावधान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। श्री व्यास ने नगरपालिका अध्यक्ष पद से इस्तीफा देकर राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना हेतु संघर्ष को पुनः प्रारम्भ किया। उन्होंने 'उत्तरदायी शासन के लिए संघर्ष व 'संघर्ष क्यों ? आदि पुस्तिकाएँ वितरित करवाई तथा 11 मई से दूसरा सत्याग्रह

- इस पर खुद महाराज ने पुलिस द्वारा उसका कत्ल करवा दिया राजपुरोहित के कत्ल से बूँदी में भारी असंतोष फैल गया नगर में 9 दिन हड़ताल रही इससे पुलिस का क्रोध और बड़ा और उसने जनता पर गोली चलादी इससे जनता राज-विरोधी हो गई ।

बूँदी प्रजामण्डल की स्थापना :- इस वातावरण में कांतिलाल की अध्यक्षता में 1931 में बूँदी प्रजामण्डल की स्थापना की गई। ऋषि दत्त मेहता, नित्यानंद नगर, गोपाल कोटिया, गोपाल लाल जोशी मोतीलाल अग्रवाल, पूनमचंद आदि बूँदी प्रजामण्डल के प्रमुख सक्रिय कार्यकर्ता थे प्रजामण्डल ने सरकार के समक्ष उत्तरदायी शासन और नागरिक अधिकारों की मांग प्रस्तुत की महाराज ने इस मांग को अस्वीकार करते हुए।

- सरकार की दमन नीति भी उग्र होने लगी तब सरकार ने 1936 में समाचार पत्र पर प्रतिबंध लगा दिए ।
- 1937 में प्रजामण्डल के तत्कालीन अध्यक्ष श्री ऋषि दत्त मेहता को 3 वर्षों के लिए राज्य से निर्वासित कर दिया गया और प्रजामण्डल को अवैध घोषित कर दिया गया ऋषि दत्त मेहता की गिरफ्तारी के बाद ब्रज सुंदर शर्मा ने प्रजामण्डल का नेतृत्व संभाला ।

बूँदी राज्य लोक परिषद् का गठन :-1942 में श्री ऋषिदत्त मेहता को गिरफ्तार कर अजमेर भेज दिया गया था जेल से रिहा होने पर ऋषिदत्त मेहता ने 1945 में बूँदी राज्य लोक परिषद् का गठन किया ।

- हरि मोहन माथुर को बूँदी राज्य लोक परिषद् का अध्यक्ष और ब्रज सुंदर शर्मा को इसका मंत्री बनाया गया ।
- इस परिषद का उद्देश्य भी उत्तरदायी शासन की मांग और नागरिक अधिकारों की रक्षा करना था बूँदी राज्य लोक परिषद को कुछ समय बाद मान्यता प्राप्त हो गई ।

बूँदी प्रजामण्डल के अन्य तथ्य - बूँदी में जन जाग्रति के कार्य में नागर परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका रही महाराजा बहादुर सिंह ने 1946 में राज्य में विधान परिषद और लोकप्रिय मंत्रिमण्डल बनाने की घोषणा की थी ।

- बूँदी में राजस्थान सेवा संघ की शाखा हाड़ौती सेवा संघ की स्थापना पंडित नयनूराम शर्मा की अध्यक्षता में की थी। इस संघ ने लोगों में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न की जिसमें तनसुख लाल मित्तल का पूरा सहयोग मिला ।
- बूँदी महाराज ईश्वर सिंह ने हड़ौती सेवक संघ की गतिविधियों के साथ-साथ, “”राजस्थान, नवीन भारत, प्रताप और परमवीर”” समाचार पत्रों की बूँदी में आने पर रोक लगा दी थी 1945 में लोक परिषद की जुलूस पर पुलिस द्वारा गोली चलाने से वकील कल्याणमल शर्मा की मृत्यु हो गई थी ।
- बूँदी में नित्यानंद और उनके पुत्र ऋषिदत्त मेहता को 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में गिरफ्तार किया गया था बूँदी प्रजामण्डल के प्रथम अध्यक्ष कांतिलाल चोथाणी थे ।

अलवर प्रजामण्डल (Alwar PrajaMandal) :- अलवर में हरीनारायण शर्मा और कुंज बिहारी मोदी के रचनात्मक कार्य के द्वारा जनता में जागृति उत्पन्न करने का प्रयास किया गया। इन्होंने अलवर में अस्पृश्यता निवारण संघ, वाल्मीकि संघ और आदिवासी संघ की स्थापना कर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की दशा सुधारने का प्रयास किया।

- इसी समय अलवर सरकार ने बानसूर (वर्तमान कोटपूतली-बहरोड़ जिले में) व थानागाजी तहसीलों में लगान में वृद्धि कर दी और कई नये कर लगा दिये गए।
- जब बानसूर व थानागाजी के किसानों ने कर देने से मना कर दिया तो राजा जयसिंह ने दोनों जगह सशत्र सैनिक भेज दिये। 14 मई 1925 को सैनिकों ने बिना पूर्व सूचना दिये गोलियां चला दी। परिणाम स्वरूप 15 व्यक्ति मारे गये और 250 घायल हो गए।
- किसानो के क्रूर दमन से अलवर वासी अपनी सरकार से पहले ही नाराज थे। इस पर ब्रिटिश सरकार ने अलवर नरेश जयसिंह को 22 मई 1933 को अलवर से निकाल दिया था।
- जेल से रिहा होते ही श्री कुंज बिहारी लाल मोदी और पंडित हरि नारायण शर्मा के प्रयत्नों से 1938 में अलवर प्रजामण्डल की स्थापना हुई । किन्तु सरकार ने इस संस्था का पंजीकरण करना स्वीकार नहीं किया। 14 मई 1940 को उसके लिए पुन: प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया गया।
- विवश होकर। अगस्त 1948 को सरकार ने इस प्रजामण्डल का पंजीकरण किया। जनवरी 1945 में अलवर प्रजामण्डल का पहला अधिवेशन श्री भवानी शंकर शर्मा की अध्यक्षता में हुआ । इस सम्मेलन में सरकार की नीतियों की कटु आलोचना की गई और उत्तरदायी सरकार की मांग की गयी।
- 1946 में प्रजामण्डल ने किसानों की मांगों का समर्थन करके उन्हें भू-स्वामित्व देने के प्रस्ताव का समर्थन किया था। 17 दिसंबर 1947 को महाराजा ने 2 वर्ष के भीतर राज्य में उत्तरदायी शासन स्थापित करने की घोषणा की।
- 1 फरवरी 1948 को भारत सरकार ने अलवर राज्य का शासन अपने हाथ में ले लिया। मार्च 1948 में मत्स्य संघ में अलवर के विलय के साथ ही राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई।
- अलवर प्रजामण्डल की स्थापना 1938 में हुई थी। लेकिन इस का प्रथम अधिवेशन 1945 में हुआ था। प्रजामण्डल की स्थापना हरि नारायण शर्मा और कुंज बिहारी मोदी द्वारा की गई थी। लेकिन इस संस्था के रजिस्ट्रेशन के बाद सरदार नत्थूमल (नत्थामल) इसके अध्यक्ष बने थे।

भरतपुर प्रजामण्डल - भरतपुर में स्वतंत्रता आंदोलन का श्रीगणेश जगन्नाथदास अधिकारी व गंगा प्रसाद शास्त्री ने किया था मेकेंजी की दमनकारी नीति पुलिस अत्याचार एवं मौलिक अधिकारों पर लगाए गए प्रतिबंध के विरोध में 1928 में भरतपुर राज्य प्रजा संघ की स्थापना की गयी।

- 1930 में जगन्नाथ कक्कड़, गोकुल वर्मा और मास्टर फकीरचंद आदि ने भरतपुर कांग्रेस मण्डल की नींव डाली। जवाहर लाल नेहरू की प्रेरणा से सितंबर 1937 में गोकुल चंद वर्मा, गोरी शंकर मित्तल आदि ने मिलकर भरतपुर कांग्रेस मण्डल की स्थापना की।
- हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन के पश्चात् और भरतपुर राज्य के महाराजा की छत्रछाया में लोकतांत्रिक प्रशासन की स्थापना के उद्देश्य से 1938 में श्री किशन लाल जोशी गोपी लाल यादव मास्टर आदित्येंद्र और युगलकिशोर चतुर्वेदी के प्रयासों से भरतपुर राज्य प्रजामण्डल की स्थापना की गई।
- गोपी लाल यादव को प्रजामण्डल का अध्यक्ष बनाया गया। ठाकुर देशराज और पंडित रेवतीशरण शर्मा को उपाध्यक्ष बनाया गया। किशन लाल जोशी को महामंत्री बनाया गया। भरतपुर प्रजामण्डल को मान्यता नहीं मिलने के कारण भरतपुर रियासत द्वारा इसे गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया।
- 1939 में महाराजा ब्रजेंद्र सिंह के राजसिंहासन ग्रहण करने के बाद ही शीघ्र प्रजामण्डल और राज्य सरकार के बीच समझौता हो गया। इस समझौते के तहत 25 अक्टूबर को भरतपुर प्रजामण्डल का पंजीकरण भरतपुर प्रजा परिषद के नाम से कर दिया गया। भरतपुर प्रजा परिषद के अध्यक्ष मास्टर आदित्येंद्र को बनाया गया।
- भरतपुर प्रजा परिषद का प्रथम अधिवेशन 30 दिसंबर 1940 को जय नारायण व्यास की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। भरतपुर प्रजा परिषद का दूसरा अधिवेशन 23-24 मई 1945 को बयाना में हुआ। अंत में 1947 के आंदोलन के बाद राज्य सरकार और प्रज्ञा परिषद में समझौता हो गया।
- 3 अक्टूबर 1947 को भरतपुर के लक्ष्मण मंदिर पर आयोजित सभा में महाराजा ने लोकप्रिय मंत्रीमण्डल बनाकर उसमें चार मंत्रियों को शामिल करने और ।। सदस्य की संविधान निर्मात्री समिति के गठन की घोषणा की। दिसंबर 1947 में भरतपुर में एक लोकप्रिय सरकारका गठन हुआ।
- दिसंबर 1947 को प्रजा परिषद के मास्टर आदित्येंद्र और गोपी लाल यादव को हिंदू महासभा के हरिदत्त शर्मा को और जमींदार किसान सभा के ठाकुर देशराज को मंत्रिमण्डल में शामिल किया गया। 18 मार्च 1948 को भरतपुर का मत्स्य संघ में विलय हो गया।
- जुगल किशोर चतुर्वेदी "दूसरे जवाहर लाल नेहरु" के नाम से प्रसिद्ध हैं। गोकुल वर्मा को शेर-ए-भरतपुर कहा जाता है।

धौलपुर प्रजामण्डल आंदोलन – धौलपुर में जन जागृति के अग्रदूत यमुना प्रसाद वर्मा थे। धौलपुर में यमुना प्रसाद वर्मा और ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु ने जन जागृति का कार्य किया।

- इन्होंने धौलपुर में 1910 में आचार सुधारिणी सभा और 1911 में आर्य समाज की स्थापना की थी।
- इनके अतिरिक्त आर्य समाज के प्रमुख स्वामी श्रद्धानंद ने 1918 से ही धौलपुर के निरंकुश शासन व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठानी आरम्भ की थी।
- श्रद्धानंद के धौलपुर में स्वशासन आंदोलन के प्रमुख कार्यकर्ता ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु जोहरीलाल इंदु पुरोहित छितर सिंह विष्णु स्वरूप वैद्य और रामदयाल प्रमुख थे इन्हें आंदोलन करने के कारण गिरफ्तार कर कठोर दंड दिया गया।
- धौलपुर में स्वशासन आंदोलन श्रद्धानन्द की मृत्यु के साथ खत्म हो गया था इसके बाद धौलपुर में राजनीतिक चेतना को जागृत करने की दृष्टि से श्री ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु और श्री जोहरीलाल इंदु ने 1934 में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की। श्री ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु ने हरिजन उत्थान का कार्य भी शुरू किया था।
- श्री ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु की इस प्रवृत्ति ने धौलपुर में बड़ी राजनीतिक जनजागृति हुई इसका एक लाभ यह हुआ कि जब 1938 में ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु और जोहरी लाल इंदु में प्रजामण्डल की स्थापना की तो इन्हे जनता का बहुत बड़ा सहयोग मिला।

धौलपुर प्रजामण्डल की स्थापना - इस प्रकार धौलपुर प्रजामण्डल की स्थापना 1938 में ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु और जोहरी लाल इंदु के प्रयासों से हुई। इस प्रजामण्डल का अध्यक्ष श्री कृष्ण दत्त पालीवाल को बनाया गया इस प्रजामण्डल का उद्देश्य उत्तरदायित्व शासन व्यवस्था व नागरिक अधिकारों की रक्षा करना था। इस प्रजामण्डल के द्वारा उत्तरदायी शासन और नागरिक अधिकारों की मांग को लेकर आंदोलन किये गए जैसे ही धौलपुर प्रजामण्डल में उत्तरदायी शासन स्थापित करने की मांग की तो राज्य ने दमन चक्र चलाया श्री जिज्ञासु के पुत्र ओमप्रकाश शर्मा रामदयाल राम प्रसाद बांकेलाल केशव देव केदारनाथ आदि कई कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गए। यह कार्यकर्ता कई महीनों बाद जेल से रिहा किये गए। श्री जिज्ञासु ने राज्य से बाहर रहकर आंदोलन का संचालन किया श्री जोहरीलाल इंदु को राज्य से निर्वासित कर दिया गया जब इंदु 1940 में पाबंदी तोड़कर राज्य में घुसे तो उन्हें पकड़ लिया गया और 5 साल बाद रिहा किया गया।

तसीमो काण्ड – तसीमो धौलपुर में प्रजामण्डल का गढ़ था।। अप्रैल 1947 को तसीमो में एक नीम के पेड़ के नीचे सार्वजनिक सभा हो रही थी।

- नीम के पेड़ पर तिरंगा फहराया गया था। पुलिस ने वहाँ पहुँचकर तिरंगा उतारने की कोशिश की, उसके बाद में एक कार्यकर्ता छतर सिंह परमार पुलिस के सामने खड़े हो गए जिनकी पुलिस ने गोली मारकर हत्या कर दी।
- इसके बाद एक अन्य कार्यकर्ता ठाकुर पंचम सिंह कुशवाहा ने विरोध किया तो उसे भी गोली मार दी गई इसके पश्चात्

3. प्रसिद्ध लोहागढ़ दुर्ग किस जिले में है?

A. चूरू B. अलवर
C. भरतपुर D. बीकानेर

(C)

4. एक खंभा महल के नाम से प्रसिद्ध प्रहरी मीनार का निर्माण किसने करवाया?

A. महाराजा अजीत सिंह
B. महाराजा जसवंत सिंह
C. राव मालदेव
D. महाराणा कुंभा

(A)

5. कुंभा द्वारा निर्मित विजय स्तंभ कितने मंजिलों का है?

A. 5 B. 7
C. 9 D. 11

(C)

6. अबुल फजल ने किस दुर्ग के विषय में कहा कि यह दुर्ग इतना ऊँचा है कि नीचे से ऊपर देखने पर सिर की पगड़ी गिर जाती है?

A. तारागढ़ दुर्ग B. मेहरानगढ़ दुर्ग
C. कुंभलगढ़ दुर्ग D. गागरोण दुर्ग

(C)

7. किस दुर्ग को राजस्थान का वैल्लोर कहा जाता है ?

A. कुंभलगढ़ B. भैंसरोडगढ़
C. बागा किला D. गढ़ बिठली दुर्ग

(B)

8. गुजरात के शासक बहादुर शाह ने चित्तौड़ दुर्ग पर आक्रमण अपने किस सेनापति के नेतृत्व में किया था?

A. लाल सिंह B. रूमी खाँ
C. अखतर सिंह D. मोहम्मद तैयब

(B)

9. तिमनगढ़ का किला स्थित है ?

A. अलवर B. भरतपुर
C. करौली D. राजसमंद

(C)

10. राजस्थान का एकमात्र दुर्ग जो मुस्लिम दुर्ग निर्माण पद्धति में बना है?

A. शेरगढ़ का किला B. मैंगनीज दुर्ग
C. चुरू का किला D. जूनागढ़

(B)

- **प्रमुख महल**

❖ **अबलामीणी का महल**

- कोटा के रावमुकुन्द सिंह द्वारा मुकन्दरा की पहाड़ियों के शिखर पर इस महल का निर्माण करवाया गया।
- दर्रा वन्य जीव अभयारण्य में यह महल स्थित है।
- इसे राजस्थान का दूसरा, हाड़ौती या छोटा ताजमहल भी कहा जाता है।
- इस नाम से इसे उपमित करने वाले विदेशी इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड थे।

❖ **डीग के महल – डीग**

- डीग महल का निर्माण महाराजा सूरजमल ने करवाया था।
- डीग महल बलुआ पत्थरों से निर्मित है।
- डीग का पुराना नाम ' दीर्घपुर ' था।
- डीग जलमहलों की नगरी के रूप में तथा फव्वारों के लिए भी प्रसिद्ध है।
- डीग भरतपुर रियासती शासकों की प्राचीन राजधानी रहा है ।
- यह महल चतुष्कोणीय आकृति का निर्माण करते है।
- डीग महल में गोपाल भवन सबसे बड़ा है। उसके दोनों तरफ सावन व भादों भवन बने हुये है।

❖ **हवामहल – जयपुर**

- हवामहल का निर्माण सवाई प्रताप सिंह द्वारा 1799 ई. में करवाया गया।
- प्रताप सिंह भगवान श्री कृष्ण के भक्त थे इसीलिए इसका निर्माण मुकुट के आकार में करवाया।
- हवामहल को उस्ताद लाल चंद कारीगर के द्वारा बनाया गया।
- हवामहल एक पाँच मंजिल की ईमारत है। हवामहल की पहली मंजिल ' शरद मंदिर ', दूसरी मंजिल ' रत्न मंदिर, तीसरी मंजिल ' विचित्र मंदिर', चौथी मंजिल ', ' प्रकाश मंदिर ' तथा पाँचवीं मंजिल ' हवा मंदिर ' के नाम से जानी जाती है।
- इसमें 365 जाली - झरोखे है।
- यह लगभग 88 फीट ऊँचा है।
- हवामहल का निर्माण बलुवा पत्थर तथा चूने से किया गया।

❖ **राजमहल (उदयपुर) :-** इस महल का निर्माण महाराणा उदयसिंह ने करवाया।
- राजमहल पिछोला झील के तट पर स्थित है।
- इस महल को प्रसिद्ध इतिहासकार फर्ग्यूसन ने **राजस्थान के विण्डसर महल की** संज्ञा दी है।
- राजमहल के अन्दर ही महाराणा प्रताप का वह ऐतिहासिक भाला रखा गया जिससे हल्दी घाटी के युद्ध में आमेर के मानसिंह पर प्रताप ने वार किया था।

❖ **एक जैसे नौ महल- जयपुर** - नाहरगढ़ दुर्ग में स्थित इन महलों का निर्माण महाराजा माधोसिंह द्वितीय ने अपने नौ पासवानों के नाम पर करवाया।
- माधोसिंह के नौ रत्न - सूरजप्रकाश, खुश प्रकाश, जवाहर प्रकाश, ललित प्रकाश, लक्ष्मी प्रकाश, आनन्द प्रकाश, चन्द्रप्रकाश, रत्न प्रकाश, वसन्त प्रकाश

❖ **खेतड़ी महल - झुंझुनूं** - खेतड़ी महल को ' राजस्थान का दूसरा हवामहल ' कहा जाता है।
- खेतड़ी महल का निर्माण राजा भोपालसिंह ने सन् 1760 में ग्रीष्म ऋतु में विश्राम के लिए किया था।
- खेतड़ी महल सात मंजिली कटोरेनुमा बुर्ज है ।
- खेतड़ी महल को शेखावटी का हवामहल कहा जाता है।

❖ **उम्मेद भवन पैलेस- जोधपुर**

- इसका शिलान्यास 1929-1942 को महाराजा उम्मेदसिंह द्वारा किया गया।
- उम्मेद भवन पैलेस एशिया के भव्य प्रसादों में से एक है।
- उम्मेद भवन का निर्माण अकाल राहत कार्यों के तहत सम्पन्न हुआ।
- उम्मेद भवन को छीतर पत्थर से बनने के कारण छीतर पैलेस भी कहा जाता है।
- उम्मेद भवन यूनानी / इटेलिक व गॉथिक शैली में बना हुआ है।

❖ **एक थम्बा महल- (मण्डोर) जोधपुर** - जोधपुर में मण्डोर के निकट इसका निर्माण महाराजा अजीतसिंह ने करवाया था ।
- अष्ट पहलू के एक थम्ब पर बना यह पत्थरों के मेल का अद्भुत नमूना है।
- एक थम्बा महल को ' प्रहरी मीनार ' के नाम से जाना जाता है।

❖ **एक थाम्बिया महल (डूंगरपुर)** - डूंगरपुर में गेपसागर के पास स्थित उदयविलास राजप्रासाद में स्थित इस महल का निर्माण महारावल शिवसिंह ने राजमाता ज्ञान कुंवर की स्मृति में करवाया था ।

❖ **रूठी रानी का महल (अजमेर)** - रूठी रानी का महल अजमेर में आनासागर झील के तट पर स्थित है।

❖ **सुनहरी कोठी (टोंक)-** सुनहरी कोठी का निर्माण नवाब वजीउद्दौला खाँ ने 1824 में करवाया।
- सुनहरी कोठी शीशमहल के नाम से प्रसिद्ध है।
- सुनहरी कोठी की पहली मंजिल का निर्माण वजीउद्दौला खाँ ने करवाया ।
- इस कोठी की दूसरी मंजिल नवाब मोहम्मद इब्राहीम अली ने 1870 ई. में बनवाई।
- सुनहरी कोठी में बैठकर नवाब धार्मिक व राजनैतिक मामलों की चर्चा किया करते थे।

❖ **मुबारक महल (टोंक)** - यहाँ पर बकरा ईद के अवसर पर ऊँट की कुर्बानी दी जाती थी।
- यह महल ऊँट की कुर्बानी के लिए प्रसिद्ध है।
- इस महल में टोंक रियासत के पहले नवाब अमीरुद्दौला ने 1817 ई. में ऊँट की कुर्बानी शुरू की थी। (वर्तमान में यह बंद है)

❖ **मुबारक महल (जयपुर)** - जयपुर के मध्य जय निवास के पास मुबारक महल का निर्माण माधोसिंह द्वितीय के द्वारा 1900 ई. में करवाया गया।
- अतिथि सेवा के लिए इसका निर्माण किया गया था।
- मुबारक महल मुगल, राजपूत, यूरोपीय शैली पर आधारित है।

❖ **चन्द्रमहल (जयपुर)** - जयपुर के सात मंजिले चन्द्रमहल का निर्माण विद्याधर के द्वारा किया गया।
- चन्द्रमहल की साज - सज्जा मानसिंह द्वितीय ने जर्मन कलाकार ए.एच. मूलर से करवाई थी ।

- चन्द्रमहल की दूसरी मंजिल को सुख निवास कहते हैं। सवाई जयसिंह की रानी सुख कुंवर के नाम पर इसका नाम रखा गया है।
- चन्द्रमहल की तीसरी मंजिल को रंग मंदिर कहा जाता है।
- महल की चौथी मंजिल को शोभा निवास, पाँचवीं मंजिल को छवी निवास, छठी मंजिल को श्री निवास तथा सातवीं मंजिल को मुकुट मंदिर कहा जाता है।
- चन्द्रमहल के पास ही प्रीतम निवास तथा माधोनिवास सुन्दर महल है।
- चन्द्रमहल के पास जयनिवास उद्यान बना हुआ है ।

राजस्थान के प्रमुख महल, हवेलियाँ व छतरियाँ

1. सावन – भादो महल किस जिले में स्थित है ?

A. अलवर B. भरतपुर
C. धौलपुर D. करौली **(B)**

2. किस महल को इतिहासकार फर्ग्यूसन द्वारा राजस्थान के बिण्डसर महल की संज्ञा दी गई थी ?

A. हवामहल
B. बादल महल
C. राज़ महल, उदयपुर
D. अबला मीणी का महल **(C)**

3. निम्न में से कौन सी मंजिल हवामहल में स्थित 5 मंजिलों में शामिल नहीं है ?

A. शरद B. रत्न
C. विचित्र D. सुख निवास
E. प्रकाश **(C)**

5. राजस्थान का ताजमहल किस महल को कहा जाता है ?

A. हवा महल B. जल महल
C. अबला मीणी का महल D. जसवंतथड़ा महल
(D)

6. उदयपुर के किस महल को उदयपुर का मुकुटमणि महल कहते हैं ?

A. जगमंदिर पैलेस B. जगनिवास महल
C. राजमहल D. सज्जनगढ़ महल
(D)

7. निम्न में से किस महल में लखनऊ के भूल – भूलैया महल एंव जयपुर के हवा महल की झलक देखने को मिलती है?

A. अबला मीणी का महल B. जसवंतथड़ा महल
C. अभेडा महल D. खेतड़ी महल
(D)

8. राजस्थान के किस महल में राम और रावण के युद्ध का चित्रण किया गया है ?

A. अभेडा महल B.चोखेलाव महल
C. लालगढ़ महल D. बनेडा महल
(D)

❖ राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ

प्रमुख राजवंशों की छतरियां

❖ जब भी किसी राजा, रानी या प्रतिष्ठित महिला-पुरुष की मौत हो जाती थी तो उसकी याद अमर रखने के लिए छतरी और देवल आदि बना दिए जाते थे। इसके पीछे धारणा यह रही है कि उसके व्यक्तित्व, कृतित्व और स्मृति का संदेश आम आदमी तक पहुंचे।

❖ गैटोर की छत्तरियाँ

- यहाँ पर जयपुर के शासकों की छत्तरियाँ है।
- सवाई जयसिंह से लेकर माधोसिंह द्वितीय तक।
- ईश्वरी सिंह की छतरी यहाँ स्थित नहीं है, ईश्वरी सिंह की छत्तरी 'ईसरलाट' के पास ही है।
- इन छतरियों में सवाई जयसिह की छतरी सबसे सुन्दर है। जिसकी एक प्रतिलिपी लंदन के केनसिंगल म्यूजियम में रखी गई है ।

❖ आहड़ की छत्तरियाँ

- यहाँ पर मेवाड़ के शासकों की छत्तरियाँ है।

अध्याय – 3

चित्रकला और हस्तशिल्प

❖ **राजस्थानी चित्रकला का नामकरण**

- गांगुली व हैवल - राजपूत चित्रकला
- एन. सी. मेहता - हिंदु चित्रशैली
- रामकृष्णदास - राजस्थानी चित्रकला
- कपड़े पर मोम की परत चढ़ाकर चित्र बनाना वार्तिक कहलाता है।
- गोबर से बनाया गया पूजा स्थल साझी कहलाता है।
- अलंकृत करके बनाना मांडणा कहलाता है।
- लकड़ी पर किया जाने वाला चित्रण कावड़ कहलाता है।
- कागज पर बने विभिन्न देवी - देवताओं के चित्रण पाने कहलाते हैं।

❖ भौगोलिक और सांस्कृतिक आधार पर राजस्थानी चित्रकला को चार प्रमुख स्कूलों / शैलियों में बांटा गया है-

मेवाड़ स्कूल	मारवाड़ स्कूल	ढूंढाड़ स्कूल	हाड़ौती स्कूल
उदयपुर, नाथद्वारा, चावण्ड, देवगढ़	जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, किशनगढ़, नागौर, अजमेर	आमेर, जयपुर, शेखावाटी, अलवर, करौली , उणियारा	बूँदी, कोटा, झालावाड़

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ

शैली	रंग
मारवाड़, देवगढ़, बीकानेर	पीला
नाथद्वारा	पीलाहरा-
अजमेर	पीलाबैंगनी-हरा-लाल-
किशनगढ़	श्वेत, गुलाबी
मेवाड़	पीलालाल-
कोटा	पीलानीला-हरा-
बूंदी	हरा
जयपुर	केसरिया, हरा, लाल

वृक्ष	चित्रशैली
कदम्ब	उदयपुर (मेवाड़) शैली
केला	किशनगढ़(नाथद्वारा) शैली
खजूर	कोटा, बूंदी शैली
पीपल	अलवर, जयपुर शैली
आम	जोधपुर, बीकानेर शैली

पशुपक्षी	चित्रशैली
कौआ, चील, ऊँट, घोड़े	जोधपुर, बीकानेर शैली
हाथी व चकोर	उदयपुर शैली
गाय	नाथद्वारा शैली
मोर व घोड़ा	जयपुर,अलवर शैली

राजस्थानी चित्रकला संग्रहालय	
पोथीखाना	जयपुर
पुस्तक प्रकाश	जोधपुर
सरस्वती भण्डार	उदयपुर
जैन भण्डार	जैसलमेर
कोटा संग्रहालय	कोटा
अलवर संग्रहालय	अलवर

चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएं	
संस्था	**स्थान**
चितेरा	जोधपुर
धोरां	जोधपुर
तूलिका कलाकार परिषद	उदयपुर
टखमण -28	उदयपुर
कलावृत	जयपुर
पैंग	जयपुर
आयाम	जयपुर
क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप	जयपुर
अंकन	भीलवाड़ा

ललित कला के विकास से संबंधित प्रमुख संस्थाएं

❖ **ललित कला अकादमी -जयपुर**

- स्थापना 24 नवम्बर, 1957
- इस अकादमी का प्रमुख कार्य कलात्मक गतिविधियों का संचालन करना, कला प्रदर्शनियों का आयोजन तथा कलाकारों को फैलोशिप प्रदान करना होता है
- राजस्थान की दृश्य तथा शिल्प कला की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन।
- राज्य में सांस्कृतिक एकता स्थापित करना।

❖ **राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स- जयपुर**

- स्थापना -1857
- जयपुर महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय द्वारा स्थापित किया गया तब इसका नाम मदरसा-हुनरी था।
- स्वतंत्रता के बाद इसका नाम राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्डक्राफ्ट्स हो गया ।
- वर्तमान में मूर्तिकला तथा चित्रकला से संबंधित डिप्लोमा करवाया जाता है।

❖ **जवाहर कला केन्द्र-जयपुर**

- स्थापना 8 अप्रैल, 1993
- इसके वास्तुकार चार्ल्स कोरिया थे।
- उद्घाटन -शंकर दयाल शर्मा (तत्कालीन राष्ट्रपति)

- राजस्थान की समृद्ध कला परम्परा के संवर्धन, लोक मानस में बिखरी सांस्कृतिक विरासत एवं मरूधरा की अनमोल धरोहर के संरक्षण हेतु ।

मुख्य तथ्य-

❖ **रामगोपाल विजयवर्गीय**

- जन्म-1905, बालेर (सवाई माधोपुर)।
- परम्परा वादी चित्रकार।
- सर्वाधिक प्रिय विषय नारी चित्रण।
- राजस्थान में एकल चित्रण प्रदर्शनी प्रारम्भ करने का श्रेय।
- राजस्थान स्कूल आर्ट के प्राचार्य रह चुके।
- राजस्थान के प्रथम चित्रकार जिन्हें वर्ष 1984 को पद्मश्री दिया गया था।

❖ **भूरसिंह शेखावत (गाँव का चितेरा)**

- जन्म-1914 धोंधलिया ग्राम (बीकानेर)।
- खाना बनाती स्त्री, सब्जी तोलती मालिन, सारंगी बाजते कलाकार, राष्ट्रभक्त नेता, शहीद, क्रांतिकारी, लौह पुरुष आदि प्रमुख चित्र।

❖ **गोवर्धन शेखावत (भीलों के चितेरे)**

- जन्म-कांकरोली (राजसमंद)
- मेंवाड़ी भीलों की जीवन शैली को चित्रित किया ।

❖ **ज्योति स्वरूप-जोधपुर**

- इनकी मुख्य चित्र श्रृंखला शिव शक्ति ज्योति श्रृंखला, इनर जंगल श्रृंखला (Inner Juwgle) स्वरूप अन्य चित्र श्रृंखलाएं हैं ।

❖ **सुरजीत कौर चोयल (जयपुर)**

- देश की पहली महिला चित्रकार जिनके चित्रों की प्रदर्शनी जापान की प्रतिष्ठत कलादीर्घा फुकोका संग्रहालय में।

❖ **सौभागमल गहलोत** (जयपुर, नीड़ का चितेरा)
❖ **परमानंद चोयल** (कोटा, भैंसों का चितेरा)
❖ **श्रीमती प्रतिभा पाण्डे (धौलपुर, कैनवास की चितेरी)**
❖ **उमेश चन्द्र शर्मा (खण्डेला, बातिक शैली के प्रसिद्ध चितेरे)**
❖ **किशन शर्मा (बेगूं, राई के दाने पर मीरां का चित्रांकन)**
❖ **क्लॉथ आर्ट के प्रणेता**
❖ **डॉ. नाथूलाल वर्मा (जयपुर, कैनवास के चित्रकार)**
❖ **सुनीत घिल्डियाल (मूर्त और अमूर्त का चितेरा)**
❖ **कैलाश चन्द शर्मा (जैन चित्रशैली का चितेरा)**

राजस्थानी चित्रकला की शैलियों का वर्गीकरण

मेवाड़ शैली

- राजस्थानी चित्रकला का प्रारंभ जैन, अपभ्रंश, मालव आदि कलाओं के सामंजस्य से माना जाता है।
- राजस्थानी चित्रशैली की मूल शैली मेवाड़ चित्रशैली को माना जाता है।
- मेवाड़ स्कूल में चित्रकला को विकसित करने का श्रेय 'महाराणा कुंभा' को जाता है।

❖ **उदयपुर शैली**

- राजस्थान की यह मूल चित्रशैली है जिसे चित्रशैलियों की जननी कहते हैं।
- यह चित्र शैली राणा कुम्भा के समय प्रारम्भ हुई।
- महाराणा जगतसिंह प्रथम (1628 से 1652) का काल मेवाड़ शैली का स्वर्णकाल कहलाता है। इसमें रागमाला (1628 ई.), रसिक प्रिया (1628-30 ई.), गीत- गोविन्द (1629 ई.), भगवद् पुराण (1648 ई. साहिबद्दीन ने) एवं रामायण (1649 ई. मनोहर ने) आदि विषयों पर लघु चित्रों का निर्माण हुआ । इन चित्रों के चित्रकार ' साहिबद्दीन एवं मनोहर ' थे।
- जगत सिंह ने चितेरों की ओवरी / तस्वीरों रो कारखानों नामक पाठशाला स्थापित की। जिसका प्रमुख चित्रकार शहाबद्दीन था। ओवरी में चित्र बनाने वाले को 'दारोगा' कहा जाता था।
- महाराणा राजसिंह प्रथम (1652 से 1680) को काव्य तथा भवन में विशेष रुचि थी। सन् 1655 ई. में साहिबद्दीन कलाकार द्वारा चित्रित ' शूकर महात्यम ' (सरस्वती भंडार, उदयपुर में संगृहीत) तथा सन् 1659 ई . का ' भ्रमर गीत ' महान् उपलब्धियाँ हैं।
- महाराणा संग्राम सिंह- द्वितीय (1710-34 ई.) के समय का प्रमुख चित्रकार 'नुरुद्दीन ' था। जिसने 'पंचतंत्र ' (कलीला - दमना) पर अनेक चित्र बनाए।
- प्रमुख चित्रकारों में साहिबदीन, मनोहर, कृपाराम, उमरा, गंगाराम, भैरोराम, शिवदत्त आदि ।
- इस शैली में पीला एवं लाल रंगों प्रमुख प्रयोग किया गया है।
- इस शैली में प्रकुख आकृति व वेशभूषा गठीला शरीर, लम्बी मूंछे, छोटा कद, विशालनयन, सिर पर पगड़ी, कमर में पटका, लंबा घेरदार जामा, कानों में मोती आदि दर्शाया गया है।
- इस शैली में नारी आकृति व वेशभूषा के चित्र मीनाकृत आँखे, गरुड़ सी लंबी नाक, ठिगना कद, लम्बी वेणी, लहंगा एवं पारदर्शक ओढ़नी से बनाये जाते थे।
- महाराणा अमरसिंह प्रथम के समय में मेवाड़ शैली पर मुगल प्रभाव लगा।
- महाराणा भीमसिंह के समय में मेवाड़ शैली पर यूरोपियन/ कम्पनी प्रभाव लगा।

रसिक प्रिया

नवरस

- यह चित्रशैली मानसिंह प्रथम के समय प्रारम्भ हुई।
- आमेर शैली के प्रारंभिक काल के चित्रित ग्रंथों में ' यशोधरा चरित्र ' (1591ई.) नामक ग्रंथ आमेर में चित्रित हुआ।
- 1588 ई . में आमेर सूरतखाने में रज्मनामा का चित्रण हुआ जिसमें 169 चित्र थे।
- सन् 1606 ई . में निर्मित ' आदिपुराण ' भी आमेर शैली की चित्रकला का तिथियुक्त क्रमिक विकास को इंगित करती है इसकी रचना पुष्पदत्त ने की थी।
- मिर्जा राजा जयसिंह के समय इस चित्रशैली का सर्वाधिक विकास हुआ जिसमें बिहारी सतसई से संबंधित सर्वाधिक चित्र हैं।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने 1639 ई . में कृष्ण- रुकमणी वेली तथा रसिकप्रिया ग्रंथों का चित्रांकन करवाया।
- हैं।
- इस चित्रशैली में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग, पशु - पक्षिओं की लड़ाइयाँ, हाथियों की लड़ाइयाँ, रागमाला, नवरस, बारहमासा, कविप्रिया, गीत गोविन्द, रसिक प्रिया, कामसूत्र के चित्र व सफेदा वृक्ष का चित्रण हुआ है।
- इस शैली के प्रमुख चित्रकार हुकुमचंद, मन्नालाल, पुष्पदत्त, मुरली थे।

❖ उणियारा उपशैली

- रावराजा सरदार सिंह (1740-1777 ई.) कला प्रेमी थे, जिन्होंने उनियारा में सुंदर महल भी बनवाए तथा धीमा, मीरबक्श, काशी, रामलखन, भीम आदि प्रमुख कलाकारों को आश्रय प्रदान किया।
- अनके पोथी चित्रों तथा लघु चित्रों के माध्यम से भी उनियारा शैली का ज्ञान होता है।
- उनियारा रावराजा के निजी संग्रह का भागवत पुराण, रामायण का उत्कृष्ट चित्रण पोथियों में है।
- कलाकार मीर बक्श द्वारा चित्रित राम,सीता, लक्ष्मण तथा हनुमान जी के चित्र उनियारा शैली का उत्कृष्ट चित्र है।

❖ हाड़ौती शैली

- राजस्थान के बूंदी, कोटा और झालावाड़ क्षेत्र पर चौहानवंशी हाड़ाओं का प्रभुत्व रहा, इसलिये यह क्षेत्र हाड़ौती क्षेत्र कहलाया। हाड़ौती स्कूल के अंतर्गत निम्नलिखित चित्र उपशैलियाँ आती हैं।

❖ कोटा उपशैली

होली, कोटा पेंटिंग, 19वीं शती

- यह चित्रशैली रामसिंह प्रथम के समय प्रारम्भ हुई तथा उम्मेद सिंह का समय इस चित्रशैली का स्वर्णकाल था।
- छत्रशाल के समय कोटा चित्रशैली ने स्वतंत्र अस्तित्व बनाया।
- महारावल भीमसिंह के समय इस चित्रशैली पर कृष्ण भक्ति का प्रभाव पड़ा।
- डालू चित्रकार ने 1768 ई. में रागमाला सेट बनाया।
- इस चित्रशैली में रानियों को राजाओं के साथ शिकार करते, राम द्वारा हिरण का शिकार का चित्र बादलों के दृश्य, बेटी की विदाई, पैर का कांटा जैसे विभिन्न चित्रों को अंकित किया गया है।
- कोटा की झाला हवेली भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- हरे रंग की पृष्ठ भूमि पर भूरे व गुलाबी रंगों से चित्रण कोटा चित्रशैली की विशेषता है।
- डालू, गोविन्द, नूरमोहम्मद, लछी राम,लालचंद व रघुनाथ प्रमुख चित्रकार हैं।

❖ बूंदी उपशैली

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश स्थित हैं।

1. *जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी. लद्दाख को मिलाकर)*
2. *लद्दाख*
3. *पंजाब (547 कि.मी.)*
4. *राजस्थान (1070 कि.मी.)*
5. *गुजरात (512 कि.मी.)*

- *रेडक्लिफ रेखा के साथ **सर्वाधिक सीमा - राजस्थान (1070 कि.मी.)***
- *रेडक्लिफ रेखा के साथ **सबसे कम सीमा- गुजरात(512 कि.मी.)***
- *रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय - श्रीनगर*
- *रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय - जयपुर*
- *रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य - राजस्थान*
- *रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य - पंजाब*
- *रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा **1070 कि.मी.** है। जो **राजस्थान के पांच जिलों** से लगती है।*

1. *1. श्रीगंगानगर-210 कि.मी.*
2. *बीकानेर-168 कि.मी.*
3. *फलौदी*
4. *जैसलमेर- 464 कि.मी.*
5. *बाड़मेर- 228 कि.मी.*

रेडक्लिफ पर सर्वाधिक सीमा जैसलमेर तथा न्यूनतम सीमा रेखा फलौदी बनाता है।

4। जिले बनाने से पहले सबसे कम सीमा बीकानेर की लगती थी।

- *रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के **हिन्दूमल कोट** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के ब्राह्मणों की ढाणी, बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।*
- *रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त*

के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपाकर राजस्थान से सीमा बनाती हैं।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा – बहावलपुर

राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर

पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान की सीमा को छूते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

राजस्थान के साथ सीमा पर पाकिस्तान का सबसे बड़ा जिला बहावलपुर है।

राजस्थान के साथ सीमा पर पाकिस्तान का सबसे छोटा जिला सुकुर है।

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- राजस्थान की रेडक्लिफ रेखा से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) की लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय – श्रीगंगानगर
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे छोटा जिला – श्रीगंगानगर

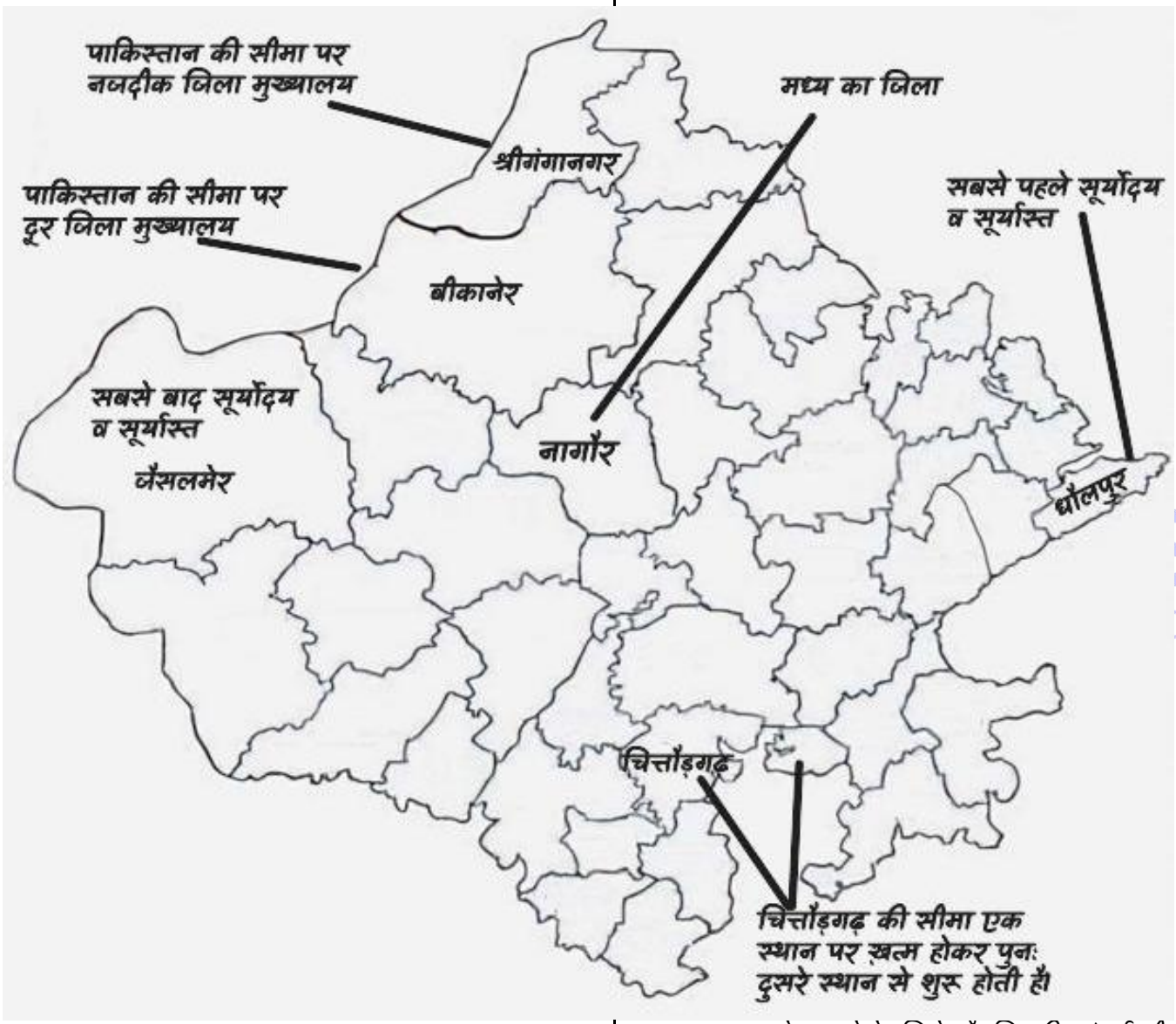

- राजस्थान के अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिले - 5 (श्री गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी, बाड़मेर)
- राजस्थान के केवल अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिले - 3 (बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी)
- राजस्थान के 13 जिलें ऐसे जिलें हैं जो न तो अंतरराज्यीय सीमा बनाते हैं तथा न ही अंतरराष्ट्रीय।
- झालावाड मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा (520 कि.मी) बनाता है तथा बाड़मेर गुजरात के साथ न्यूनतम 14 कि.मी. की सीमा बनाता है।

- राजस्थान के 2 ऐसे जिले हैं जिनकी अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा है –
  1. श्रीगंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब)
  2. बाड़मेर (पाकिस्तान + गुजरात)

<u>राजस्थान के 4 जिले ऐसे हैं जिनकी सीमा दो – दो राज्यों से लगती है-</u>

हनुमानगढ :- पंजाब + हरियाणा

धौलपुर :- उत्तरप्रदेश + मध्यप्रदेश

बाँसवाड़ा :- मध्यप्रदेश + गुजरात

डीग :- उत्तरप्रदेश + हरियाणा

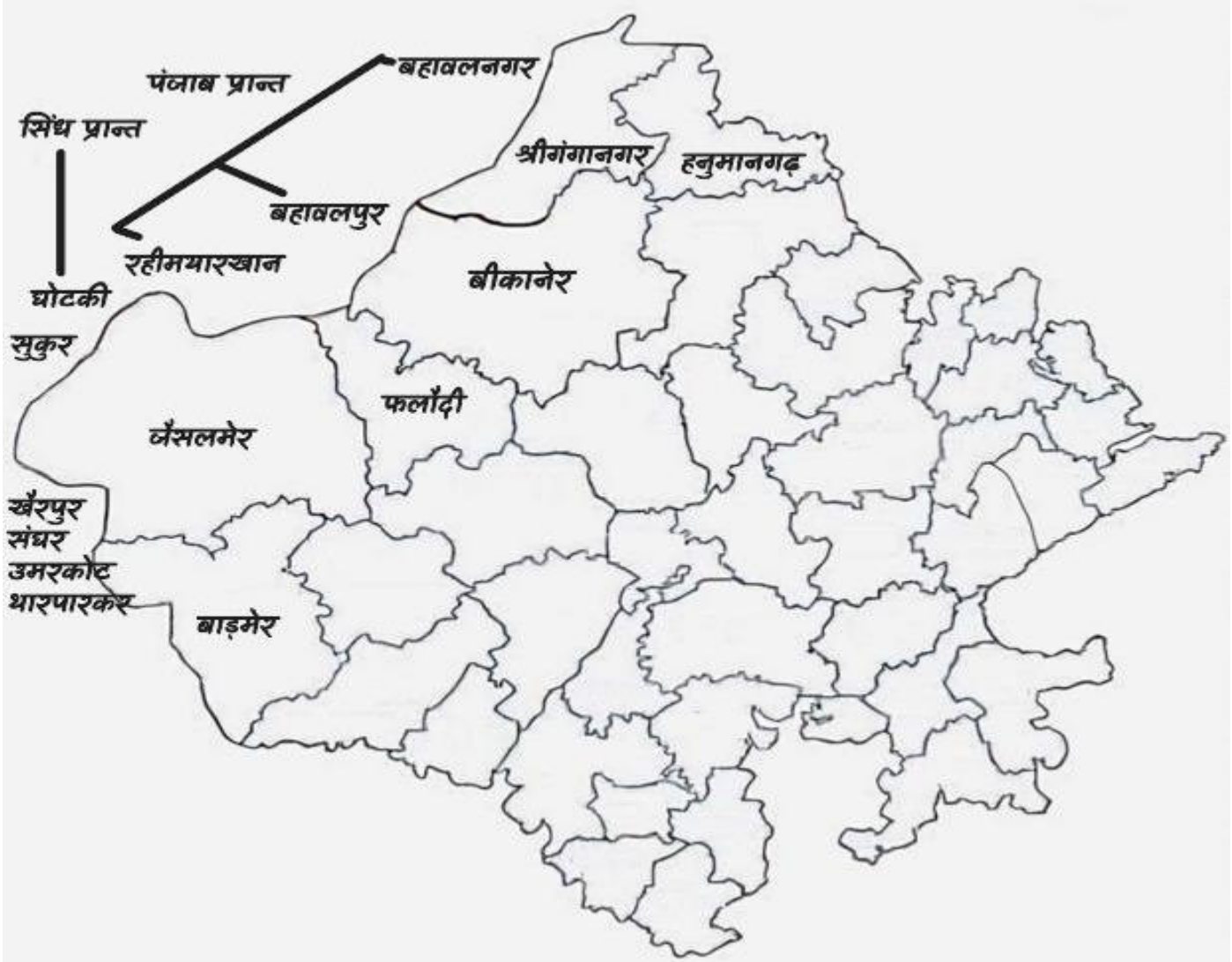

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान की अन्य राज्यों से सीमा

राजस्थान के साथ जिन राज्यों की सीमा लगती है उन राज्यों के नाम :-

शोर्ट ट्रिक :- "पं. हरि उत्तर में गुम गयो"

सूत्र		राज्य
पं	-	पंजाब
हरि	-	हरियाणा
उत्तर	-	उत्तर प्रदेश
में	-	मध्य प्रदेश
गु	-	गुजरात

पंजाब (४१ किमी०)

- राजस्थान के दो जिलों की सीमा पंजाब से लगती है तथा पंजाब के दो जिले फाजिल्का व मुक्तसर की सीमा राजस्थान से लगती है ।
- पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा श्रीगंगानगर व न्यूनतम सीमा हनुमानगढ़ की लगती है।
- पंजाब सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा दूर जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ है।
- पंजाब सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला हनुमानगढ़ व छोटा श्रीगंगानगर जिला है।

हरियाणा (1262 किमी॰)

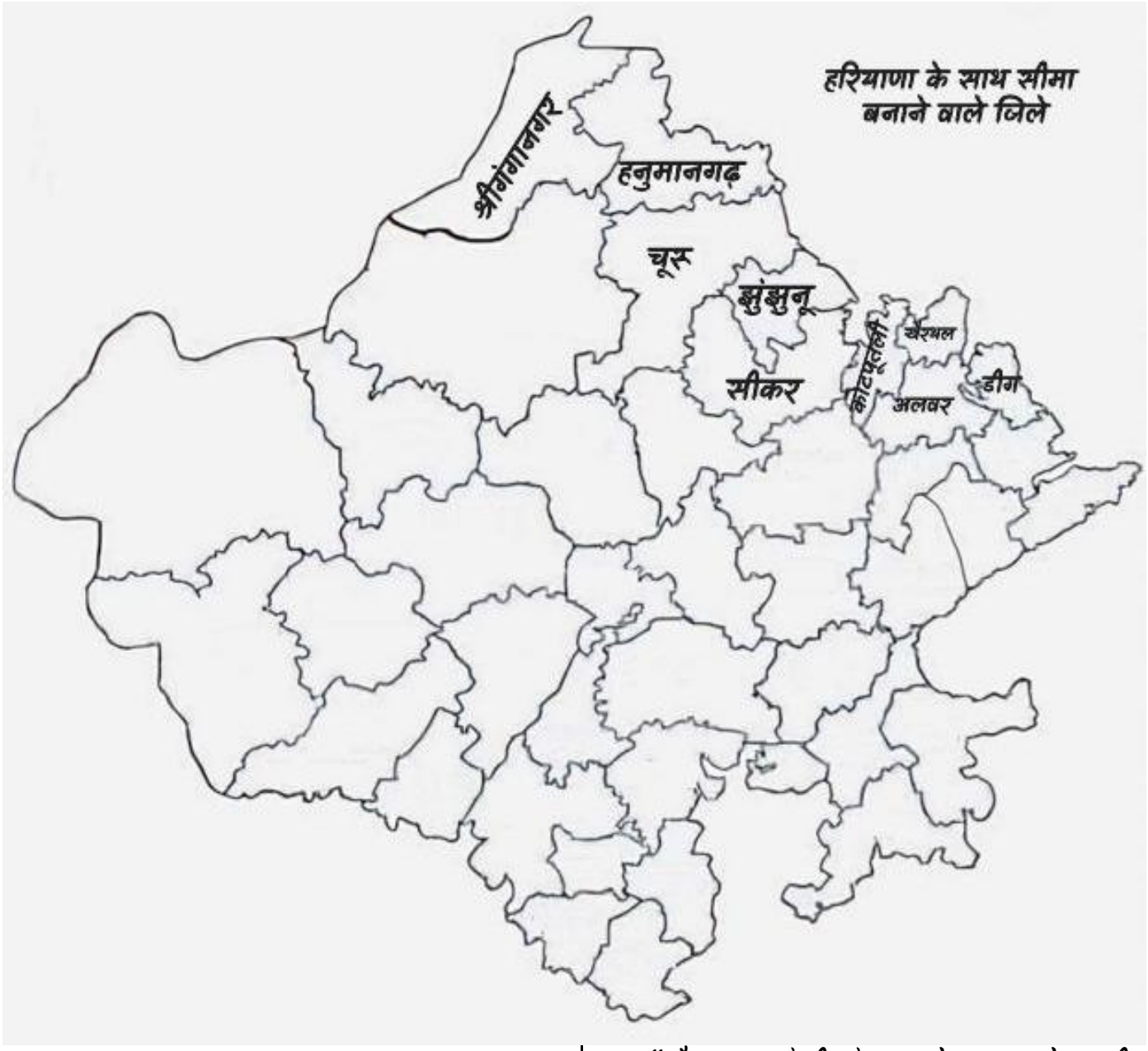

- राजस्थान के 8 जिलों (हनुमानगढ़, चुरू, झुंझुनू, सीकर, कोटपुतली, खैरथल, अलवर, डीग) की सीमा हरियाणा के 7 जिलों (सिरसा, फतेहबाद, हिसार, भिवाणी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात / नूह) से लगती है।
- हरियाणा सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला चुरू है।
- हरियाणा सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा जिला खैरथल है।
- हरियाणा के साथ सर्वाधिक सीमा हनुमानगढ़ व न्यूनतम सीमा अलवर की लगती है तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ है।
- मेवात (नूह) नव निर्मित जिला है जो राजस्थान के अलवर जिले को छूता है।
- राजस्थान के 8 जिलों में से 3 नवनिर्मित जिलें हैं जो (डीग, खैरथल, कोटपूतली) हरियाणा से सीमा साझा करतें है।

शोर्ट ट्रिक

हरियाणा की सीमा से लगने वाले राजस्थान के जिले है।

"खैर हनुमान ने **डीग** के **झुन्झुने चुराकर कोट अली** को दिए"

सूत्र		**जिला**
खैर	-	खैरथल
हनुमान	-	हनुमानगढ़
डीग	-	डीग
झुंझुन्ने	-	झुंझुनू
चुरा	-	चुरू
कोट	-	कोटपूतली
अली	-	अलवर

अध्याय – 6

राजस्थान के प्राकृतिक संसाधन

खनिज सम्पदा

राजस्थान में खनिज संसाधन –

राजस्थान में 81 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं आइए जानते हैं वह कौन - कौन से खनिज यहाँ पाए जाते हैं।

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है - पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट
2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -जस्ता - 97%, फ्लोराइड 96%, **एस्बेस्टस** 96 %, रॉकफोस्फेट 95%, जिप्सम 94 % चूना पत्थर 98%, खड़िया मिट्टी 92%, घीया पत्थर 90%, चांदी 80%, मकराना (मार्बल) 75%, सीसा 75%, **फेल्सपार** 75%, टंगस्टन 75%, कैल्साइट 70%, फायर क्ले 65%, ईमारती पत्थर 60%, बेंटोनाइट 60%, कैडमियम 60%
3. वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है - लोहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज तेल, ग्रेफाइट

राजस्थान में पाए जाने वाले खनिजों को तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है –

1. **धात्विक खनिज** – लौह अयस्क, मैंगनीज, टंगस्टन, सीसा, जस्ता, तांबा, चांदी इत्यादि।
2. **अधात्विक खनिज** - अभ्रक, एस्बेस्टस, फेल्सपार, बालुका मिट्टी, चूना पत्थर, पन्ना, तामड़ा इत्यादि।
3. **ईंधन** - कोयला, पेट्रोलियम, खनिज इत्यादि।

दोस्तों खनिजों की दृष्टि से राजस्थान में अरावली प्रदेश और पठारी प्रदेश काफी समृद्ध है।

- **धात्विक खनिज –**

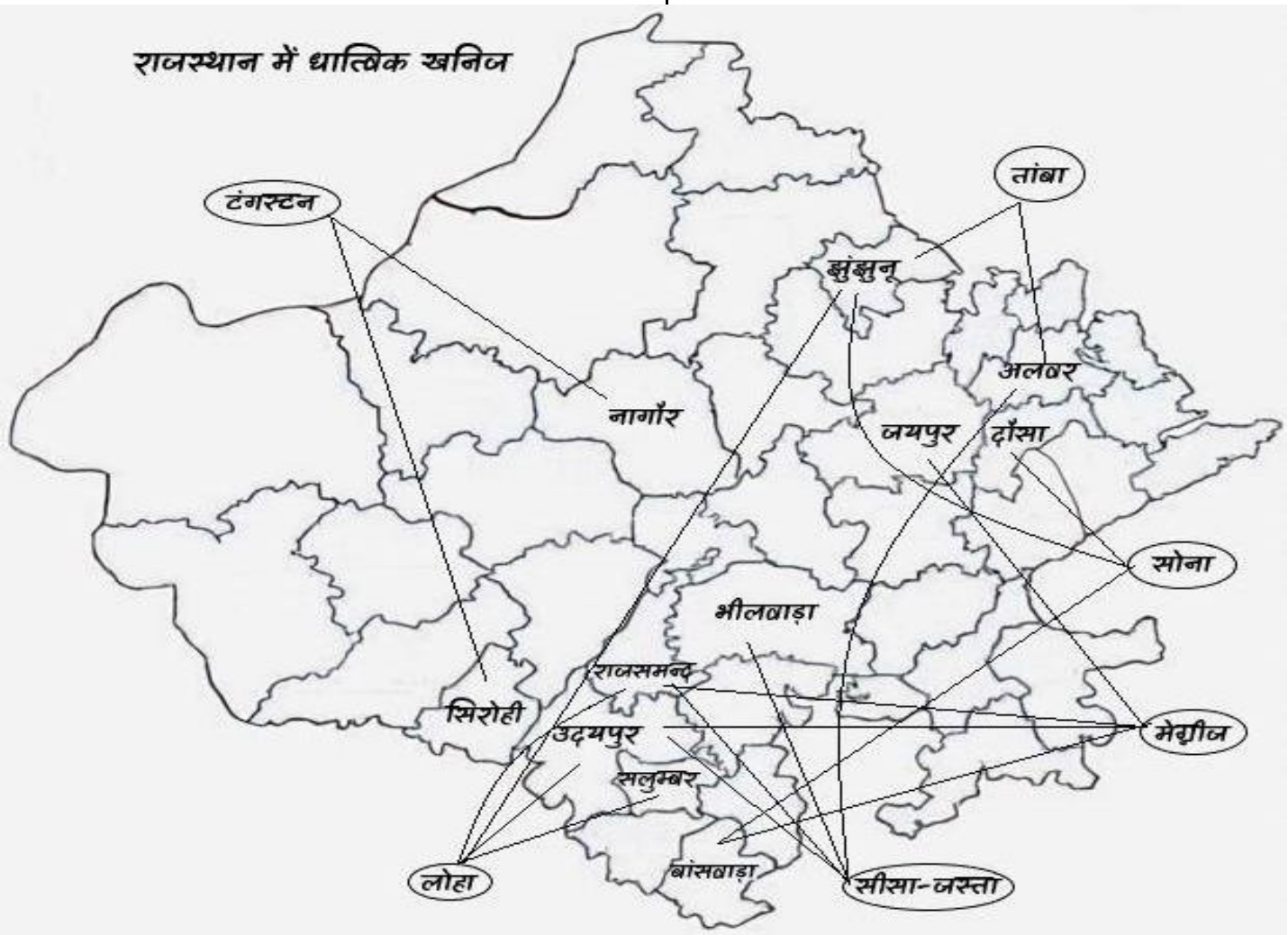

1. लोहा –राजस्थान में लोहा मुख्य रूप से अरावली के उत्तर – पूर्व एवं दक्षिण- पूर्व में पाया जाता है।

लौहा अयस्क चार प्रकार का होता है-

i. मैग्नेटाइट	-	74 %
ii. हेमेटाइट	-	65 %
iii. लिमोनाइट	-	50 %
iv. सिडेराइट	-	40 %

→ राजस्थान में मुख्य रूप से लोहे का उत्पादन निम्न स्थानों पर होता है एवं राजस्थान में हेमेटाइट व लिमोनाइट लौह अयस्क पाया जाता है।

प्रमुख खान-

- मोरिजा- बानोल- सामोद, जयपुर
- नीमला- राइसेला- लालसोट, दौसा

- सिंघाना- डाबला- झुंझुनूं
- नीम का थाना
- थूर हुण्डेर - उदयपुर
- नाथरा की पाल – सलूम्बर
- **राजस्थान में सबसे अधिक लौंहे का उत्पादन जयपुर जिले से होता है** । यह हेमेटाइट प्रकार का है।

2. सीसा-जस्ता :-

- सीसे जस्ते के अयस्क को गैलेना कहा जाता है । **यह अयस्क मिश्रित रूप में मिलने के कारण इसे जुड़वा खनिज भी कहते हैं।**
- राजस्थान में जिन स्थानों पर सीसे – जस्ते का उत्खनन होता है उन्हीं स्थानों से चाँदी व तांबा का उत्खनन होता है।

प्रमुख खान-

- **जावर खान- उदयपुर**

→ **यह देश की सबसे बड़ी जस्ते की खान है।**

- राजपुरा–दरीबा- राजसमंद
- पुर- दरीबा- भीलवाड़ा
- रामपुरा- आगूचा- भीलवाड़ा
- गुढ़ा किशोरी - अलवर
- चौथ का बरवाड़ा - सवाई माधोपुर
- मोचिया – मगरा - उदयपुर
- रेल- मगरा- राजसमंद

→ राजस्थान में जस्ते के उत्खनन के लिए दो संयंत्र स्थापित किये गये हैं।

i. हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर :- इसकी स्थापना केन्द्र सरकार के द्वारा की गई जो मुख्य रूप से देबारी नामक स्थान पर उत्खनन का कार्य करता है।

ii. चन्देरिया सुपर जिंक स्मेल्टर, चितौड़गढ :- इसकी स्थापना ब्रिटेन के सहयोग से की गई जो मुख्य रूप से जस्ते का उत्खनन कार्य करता है।

→ राजस्थान में सीसा गलाने का संयंत्र न होने के कारण सीसे के अयस्क को टुंडू बिहार भेजा जाता है।

→ राजसमंद के दरीबा, नामक स्थान पर सीसा गलाने का संयंत्र स्थापित किया गया है लेकिन इसकी क्षमता कम होने के कारण सीसे के बचे हुए अयस्क को बिहार भेजा जाता है।

3. चाँदी :-

देश में सबसे अधिक चाँदी का उत्पादन राजस्थान में होता है।

प्रमुख खान

- राजपुरा – दरीबा - राजसमंद
- रामपुरा - आगूचा- भीलवाड़ा

4. सोना :- राजस्थान में सबसे अधिक सोने के भण्डार बाँसवाड़ा जिले में पाया जाता है।

→ इसके अलावा दौंसा जिले में भी सोने के क्षेत्रों का पता लगाया गया है।

बाँसवाड़ा के प्रमुख खान

- आनन्दपुर - भूकिया क्षेत्र
- जगतपुर

अन्य स्थान

- धानोता – झुंझुनू
- धानी बासडी – दौंसा

नोट - आनन्दपुर भूकिया बाँसवाड़ा में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के द्वारा सोने की खोज का कार्य किया जा रहा है।

5. तांबा :- तांबा राजस्थान में सबसे अधिक खेतड़ी (झुंझुनू) नामक स्थान से निकाला जाता है।

→ तांबे के उत्पादन में राजस्थान का उड़ीसा के बाद दूसरा स्थान है एवं भंडार की दृष्टि से उड़ीसा, आंध्रप्रदेश के बाद तीसरा स्थान है।

→ राजस्थान में तांबा परिशोधन शाला खेतड़ी कस्बे में स्थापित की गयी है।

→ राजस्थान में तांबे के उत्खनन का कार्य हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड के द्वारा किया जा है।

→ हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड की राजस्थान में 3 परियोजनाएँ चल रही है।

i. HCL- Hindustan Copper Ltd.- खेतड़ी (झुंझुनू)
ii. चांदमारी- कॉपर लि.- झुंझुनू
iii. नीम का थाना कॉपर लि. – नीमकाथाना

तांबे के प्रमुख उत्खनन क्षेत्र

खेतड़ी (झुंझुनू) व आसपास के क्षेत्र

{तांबा तीनों चट्टानों में पाया जाता है आग्नेय, अवसादी तथा कायांतरित}

• खो - दरीबा	-	अलवर
• नीम का थाना	-	सीकर
• पुर बनेड़ा – दरीबा	-	भीलवाड़ा
• भगोनी	-	अलवर
• बन्नों वाली की ढाणी	-	सीकर
• राजपुर- दरीबा	-	राजसमंद
• बीदासर	-	चुरू

नोट- राजस्थान में सबसे अधिक तांबे के क्षेत्रों का खेतड़ी झुंझुनू में पता लगाया गया है।

6. मैंगनीज :-राजस्थान में सबसे अधिक मैंगनीज का उत्पादन बाँसवाड़ा जिले में होता है ।

प्रमुख उत्पादक क्षेत्र – सर्वाधिक तलवाड़ा, लीलवानी, नरडिया, सिवोनिया, कालाखूंट, तिम्यामोरी, कांसला (बाँसवाड़ा), सरूपपुरा, रामौंसन, छोटी सार व बड़ी सार (उदयपुर), नगेड़िया (राजसमन्द), जयपुर व सवाईमाधोपुर आदि ।

7. संगमरमर :

→ संगमरमर मुख्य रूप से अवसादी चट्टानों में पाये जाते है।

→ चूना-पत्थर पर आधारित दाब, ताप एवं आंतरिक क्रियाओं के द्वारा जो चट्टानें कठोर हो जाती है उन अवसादी चट्टानों को मार्बल (संगमरमर) कहा जाता है।

अध्याय – 2

मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्

- मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल के द्वारा संविधान के **अनुच्छेद 164 (1)** के तहत की जाती है ।
- सामान्यत, राज्यपाल बहुमत प्राप्त दल के नेता को मुख्यमंत्री नियुक्त करता है । लेकिन यदि चुनावों में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है, उस स्थिति में राज्यपाल स्वविवेक से मुख्यमंत्री नियुक्त करता है। उसे एक माह के भीतर सदन में विश्वास मत प्राप्त करने के लिए कहता है ।

  राज्यपाल स्वविवेक द्वारा मुख्यमंत्री की नियुक्ति ऐसे समय पर करता है जब कार्यकाल के दौरान किसी मुख्यमंत्री की मृत्यु हो जाए और कोई उत्तराधिकारी तय नहीं हो या चुनावों में किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ हो।

  NOTE- केन्द्र शासित प्रदेशों में (जहाँ विधानसभा है) मुख्यमंत्रियों की नियुक्ति, राष्ट्रपति करता है । वर्तमान में भारत के तीन केन्द्र शासित प्रदेशों क्रमशः पुदुच्चेरी, दिल्ली और जम्मू- कश्मीर में विधानसभाओं का प्रावधान है ।
- **अनुच्छेद 164 (3)** मुख्यमंत्री व मंत्रियों को शपथ राज्यपाल दिलाता है । राज्य का मुख्यमंत्री कार्यग्रहण से पूर्व राज्यपाल के समक्ष पद व गोपनीयता की शपथ ग्रहण करता है। मुख्यमंत्री व मंत्रियों की शपथ का प्रारूप **भारतीय संविधान की अनुसूची 3** में मिलता है ।

  अनुच्छेद 164 (4) मुख्यमंत्री एवं मंत्रियों की योग्यता भारतीय संविधान में मुख्यमंत्री पद के लिए योग्यताएँ आवश्यक है जो एक मंत्री पद के लिए होती है । जैसे–

  (1) न्यूनतम आयु 25 वर्ष हो ।

  (2) राज्य विधानमण्डल के दोनों में से किसी एक सदन का सदस्य हो ।

  NOTE :- यदि मुख्यमंत्री विधानमण्डल के किसी भी सदन का सदस्य न भी हो तो 6 माह तक मुख्यमंत्री रह सकता है । 6 माह के भीतर उसे विधानमण्डल के किसी एक सदन की सदस्यता ग्रहण करनी पड़ती है अन्यथा त्यागपत्र देना पड़ता है । मुख्यमंत्री सामान्यतः विधानमण्डल के निम्न सदन (विधान सभा) का सदस्य होता है, लेकिन उच्च सदन (विधान परिषद्) के सदस्य को भी मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है यदि उस राज्य में द्विसदनात्मक विधान मण्डल है तो ।

  NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानपरिषद् का सदस्य है तो वह

  (i) राष्ट्रपति के चुनाव में भाग नहीं ले सकता।

  (ii) वह अविश्वास प्रस्ताव पर वोट नहीं कर सकता है क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव विधानसभा में लाया जाता है ।
- **अनुच्छेद 164 (5)** मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों व कार्यकाल

  मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों का निर्धारण राज्य विधानमण्डल द्वारा किया जाता है । वर्तमान में राजस्थान के मुख्यमंत्री को 75,000 रु प्रतिमाह वेतन मिलता है । (। अप्रेल, 2019 के बाद) स्मरणीय तथ्य : मुख्यमंत्री का कार्यकाल 5 वर्ष होता है, परन्तु वह राज्यपाल के प्रसादपर्यंत अपने पद पर बना रहता है । अर्थात जब तक कि उसका विधानसभा में बहुमत है । लेकिन यदि मुख्यमंत्री विधानसभा में अपना बहुमत खो देता है तो उसे त्यागपत्र दे देना चाहिए अन्यथा राज्यपाल उसे बर्खास्त कर सकता है । मुख्यमंत्री अपना त्यागपत्र राज्यपाल को देता है । और मुख्यमंत्री का त्यागपत्र समस्त मंत्रिपरिषद् का त्यागपत्र माना जाता है ।

  अनुच्छेद 164 (2) - राज्य की मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होती है ।

मुख्यमंत्री के कार्य एवं शक्तियाँ

मंत्रिपरिषद् के संबंध में

- मुख्यमंत्री की सलाह से राज्यपाल द्वारा मंत्रियों की नियुक्ति की जाती है ।
- मुख्यमंत्री, मंत्रियों के मध्य विभागों का बंटवारा करता है और उनमें फेरबदल भी करता है । मतभेद होने पर वह किसी भी मंत्री को त्यागपत्र देने के लिए कह सकता है या राज्यपाल को उसे बर्खास्त करने का परामर्श दे सकता है।
- मुख्यमंत्री, मंत्रिपरिषद् एवं मंत्रिमण्डल की बैठकों की अध्यक्षता करता है ।

  NOTE- मुख्यमंत्री की अनुपस्थिति में सबसे वरिष्ठ मंत्री मंत्रिमण्डल की अध्यक्षता करता है।
- वह सभी मंत्रियों को उनके कार्यों में परामर्श देता है तथा उनके कार्यों पर नियंत्रण भी रखता है ।
- मुख्यमंत्री, राज्यपाल और मंत्रिपरिषद् के बीच की कड़ी के रूप में कार्य करता है ।

अनुच्छेद 164 (1) क - इस अनुच्छेद को 91 वें संविधान संशोधन 2003 द्वारा जोड़ा गया । इसमें राज्य मंत्रिपरिषद् का आकार निश्चित किया गया। राज्य मंत्रिपरिषद् में मुख्यमंत्री सहित अधिकतम मंत्री उस राज्य की कुल विधानसभा सीटों का 15 % तथा मुख्यमंत्री सहित न्यूनतम मंत्री 12 होंगे ।

राज्यपाल के संदर्भ में

अनुच्छेद 167- इसमें मुख्यमंत्री के संवैधानिक कर्त्तव्यों का उल्लेख मिलता है ।

(i) वह मंत्रिपरिषद् द्वारा राज्य के प्रशासन से संबंधित मामलों के लिए सभी निर्णयों तथा विधायन के प्रस्तावों के बारे में राज्यपाल को सूचित करें।

(ii) राज्यपाल द्वारा राज्य के प्रशासन से संबंधित मामलों अथवा विधायन प्रस्तावों के बारे में माँगे जाने पर सूचना प्रदान करना।

(iii) यदि राज्यपाल चाहे तो मंत्रिपरिषद् के समक्ष किसी ऐसे मामले को विचारार्थ रखे जिस पर निर्णय तो किसी

मंत्री द्वारा लिया जाना है लेकिन जिस पर मंत्रिपरिषद् विचार नहीं किया है ।

NOTE :- राज्य की प्रमुख संवैधानिक संस्था जैसे:- राज्य के महाधिवक्ता (अनुच्छेद-165), राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों (अनुच्छेद 243 I-पंचायतीराज, अनुच्छेद 243 Y- नगर निकायों के लिए) तथा राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों (अनुच्छेद-316) राज्य निर्वाचन आयुक्त (अनुच्छेद 243 K-पंचायतीराज व अनुच्छेद 243 ZA- नगर निकायों के लिए) की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा मंत्रिपरिषद की सलाह (विशेषतया मुख्यमंत्री) की जाती है।

NOTE :- राज्य के प्रमुख सांविधिक/ वैधानिक निकायों जैसे:- राजस्थान मानवाधिकार आयोग, राजस्थान सुचना आयोग के अध्यक्षों व सदस्यों तथा लोकायुक्त संस्था के अध्यक्ष की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा एक चयन समिति की सिफारिश पर की जाती है जिसका अध्यक्ष मुख्यमंत्री होता।

NOTE :- राजस्थान महिला आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति राज्य सरकार (मुख्यमंत्री) द्वारा की जाती है।

राज्य विधानमण्डल के संबंध में

- मुख्यमंत्री, राज्यपाल को किसी भी समय विधानसभा विघटित करने की सिफारिश कर सकता है ।
- मुख्यमंत्री ही राज्य विधानसभा के पटल पर सरकार की नीतियों की घोषणा करता है ।
- मुख्यमंत्री, राज्यपाल को सत्राहूत व सत्रावसान के संबंध में सलाह देता है ।

मुख्यमंत्री के अन्य कार्य

- राज्य आयोजना बोर्ड के अध्यक्ष होते है ।
- अंतर्राज्यीय परिषद (अनुच्छेद 263) के सदस्य होते है।
- राष्ट्रीय विकास परिषद के सदस्य होते है ।
- नीति आयोग के सदस्य होते है ।
- वह संबंधित क्षेत्रीय परिषदों के क्रमवार उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते है तथा एक समय में इनका कार्यकाल1 वर्ष का होता है ।
- मुख्यमंत्री राज्य सरकार का मुख्य प्रवक्ता तथा आपातकाल के समय वह राजनीतिक स्तर पर मुख्य प्रबंधक होता है ।

उपमुख्यमंत्री

यह एक गैर - संवैधानिक पद है । यह एक परम्परा के तौर पर किसी राजनीतिक दल को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से सृजित किया जाता है ।

उपमुख्यमंत्री	मुख्यमंत्री	वर्ष
टीकाराम पालीवाल	जयनारायण व्यास	1952-1954
हरिशंकर भाभड़ा	भैरोसिंह शेखावत	1994-1998
बनवारी लाल बैरवा	अशोक गहलोत	2003
कमला बेनीवाल	अशोक गहलोत	2003
सचिन पायलट	अशोक गहलोत	2018
दीया कुमारी	भजनलाल	2023
प्रेम चंद बैरवा	भजनलाल	2023

NOTE :- राजस्थान के तीन ऐसे मुख्यमंत्री जो विपक्ष / प्रतिपक्ष के नेता भी रहे :-(1) भैरोंसिंह शेखावत (तीन बार) (2) हरिदेव जोशी (एक बार) (3) वसुंधरा राजे (एक बार)

राजस्थान के मुख्यमंत्री

क्र. सं.	मुख्यमंत्री	कार्यकाल
1.	श्री हीरालाल शास्त्री	07.04.1949-05.01.1951
2.	श्री सी.एस. वैंकटाचार्य	06.01.1951-25.04.1951
3.	श्री जयनारायण व्यास	26.04.1951-03.03.1952
4.	श्री टीकाराम पालीवाल	03.03.1952 - 31.10.1952
5.	श्री जयनारायणव्यास	01.11.1952-12.11.1954
6.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	13.11.1954-11.04.1957
7.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	11.04.1957-11.03.1962
8.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	12.03.1962-13.03.1967
9.	राष्ट्रपति शासन	13.03.1967-26.04.1967
10.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	26.04.1967-09.07.1971
11.	श्री बरकतुल्लाखां	09.07.1971-11.10.1973
12.	श्री हरि देव जोशी	11.10.1973-29.04.1977
13.	राष्ट्रपति शासन	30.04.1977-21.06.1977
14.	श्री भैरोंसिंह शेखावत	22.06.1977-16.02.1980

15.	राष्ट्रपति शासन	17.02.1980-05.06.1980
16.	श्री जगन्नाथ पहाडिया	06.06.1980-13.07.1981
17.	श्री शिवचरण माथुर	14.07.1981-23.02.1985
18.	श्री हीरालाल देवपुरा	23.02.1985-10.03.1985
19.	श्री हरि देव जोशी	10.03.1985-20.01.1988
20.	श्री शिव चरण माथुर	20.01.1988-04.12.1989
21.	श्री हरि देव जोशी	04.12.1989-04.03.1990
22.	श्री भैरों सिंह शेखावत	04.03.1990-15.12.1992
23.	राष्ट्रपति शासन	15.12.1992-03.12.1993
24.	श्री भैरोंसिंह शेखावत	04.12.1993-01.12.1998
25.	श्री अशोक गहलोत	01.12.1998-08.12.2003
26.	श्रीमती वसुन्धरा राजे	08.12.2003-13.12.2008
27.	श्री अशोक गहलोत	13.12.2008-13.12.2013
28.	श्रीमती वसुन्धरा राजे	13.12.2013-17.12.2018
29.	श्री अशोक गहलोत	17.12.2018 से 15 दिसम्बर 2023
30.	श्री भजनलाल शर्मा	15 दिसम्बर 2023 से लगातार

<u>महत्वपूर्ण तथ्य -</u>

- राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री- **हीरालाल शास्त्री**
- राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री- **टीकाराम पालीवाल**
- राजस्थान के प्रथम उपमुख्यमंत्री- **टीकाराम पालीवाल**
- एकमात्र व्यक्ति जो राजस्थान के मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री दोनों पदों पर रहे- **टीकाराम पालीवाल**
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो कि मनोनीत व निर्वाचित हुए- **जयनारायण व्यास**
- राजस्थान में सर्वाधिक कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री- **मोहनलाल सुखाड़िया**
- राजस्थान में न्यूनतम कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री- **हीरालाल देवपुरा**
- राजस्थान के सबसे युवा मुख्यमंत्री- **मोहनलाल सुखाड़िया**
- राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री जिनकी पद पर रहते हुए मृत्यु हुई- **बरकतुल्ला खां**
- राजस्थान के प्रथम मुस्लिम (अल्पसंख्यक) मुख्यमंत्री- **बरकतुल्ला खां**
- राजस्थान के प्रथम दलित मुख्यमंत्री (अनुसूचित जाति के)- **जगन्नाथ पहाडिया**
- राजस्थान के एकमात्र ऐसे मुख्यमंत्री जो उपराष्ट्रपति भी बने – **भैरोसिंह शेखावत**
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो विधानसभा अध्यक्ष भी रहे- **हीरालाल देवपुरा**
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो राज्य वित्त आयोग (दूसरा) के अध्यक्ष भी बने- **हीरालाल देवपुरा**

एक से अधिक बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बनने वाले व्यक्ति-

(A) श्री मोहनलाल सुखाड़िया (4 बार)
(B) श्री भैरोसिंह शेखावत (3 बार)
(C) श्री हरिदेव जोशी (3 बार)
(D) श्री अशोक गहलोत (3 बार)
(E) श्रीमती वसुंधरा राजे (2 बार)
(F) श्री शिवचरण माथुर (2 बार)
(G) श्री जयनारायण व्यास (1 बार मनोनीति, 1 बार निर्वाचित)

राजस्थान के ऐसे मुख्यमंत्री जो राज्यपाल भी रहे : -

(A) मोहनलाल सुखाड़िया- कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु के राज्यपाल रहे ।
(B) हरिदेव जोशी- असम, मेघालय, पं . बंगाल के राज्यपाल रहे ।
(C) शिवचरण माथुर- असम के राज्यपाल रहे ।
(D) जगन्नाथ पहाड़िया- बिहार, हरियाणा के राज्यपाल रहे।

राजस्थान के तीन ऐसे मुख्यमंत्री जो विपक्ष / प्रतिपक्ष के नेता भी रहे :-

(A) भैरोसिंह शेखावत (तीन बार)
(B) हरिदेव जोशी (एक बार)
(C) वसुंधरा राजे (एक बार)

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2025 - https://shorturl.at/Td2tN (87 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKj14nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2g22fJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)

whatsapp - https://wa.link/bdirzx 1 web.- https://shorturl.at/xceN2

FREE SAMPLE

RAS Pre. 2025	02 फरबरी 2025	87 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 596 + students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
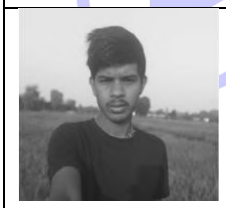	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
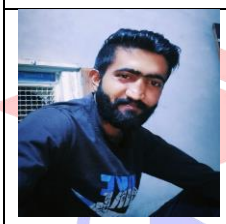	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

Click on the below link to purchase notes

WhatsApp करें - https://wa.link/bdirzx

Online Order करें - https://shorturl.at/xceN2

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO